सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक 119 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, शुक्रवार 5 जून, 2026
मूल्य ₹ 3/-

मनुष्य को दया कभी नहीं छोड़नी चाहिए क्योंकि दया ही धर्म का मूल है और इसके विपरीत अहंकार समस्त पापों की जड़ होता है–

–गोस्वामी तुलसीदास

भारत का अफगानिस्तान से एक मात्र टेस्ट... 7 | राज्य सभा चुनावों के लिए दांव... 3 | भाजपा के जलापूर्ति के दावे जमीनी... 2

आया नया मोर्चा, हिल जाएगी मोदी सरकार की चूलें!

शिक्षा मंत्री का इस्तीफा या देशव्यापी बगावत?

» कॉकरोच की पहली अग्निपरीक्षा

» आंदोलन सिर्फ सोशल मीडिया की हलचल है या फिर बड़े आंदोलन की दस्तक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। देश की राजनीति में कई आंदोलन हुए कई नारों ने सुर्खियां बटोरीं लेकिन क्या कोई ऐसा आंदोलन भी हो सकता है जो सीधे देश के करोड़ों युवाओं के गुस्से को राजनीतिक चुनौती में बदल दे? यही सवाल आज सत्ता के गलियारों से लेकर सोशल मीडिया के रणक्षेत्र तक गूंज रहा है। नीट पेपर लीक का मामला अभी ठंडा भी नहीं पड़ा कि कॉकरोच आंदोलन ने सरकार के सामने नई चुनौती खड़ी कर दी है।

सोशल मीडिया के जरिये वजूद में आयी कॉकरोच जनता पार्टी का अल्टीमेटम साफ है अगर 5 जून की शाम तक केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान इस्तीफा नहीं देते है तो 6 जून से देशव्यापी विरोध का बिगुल बज जाएगा। सोनम वांगचुक के सोशल मीडिया पर तैरते वीडियो कुछ इस तरह का संदेश दे रहे हैं। यह सिर्फ एक मंत्री के इस्तीफे की मांग नहीं है। यह उस व्यवस्था के खिलाफ उभरता हुआ आक्रोश है जिस पर लाखों छात्रों के सपनों की सुरक्षा की जिम्मेदारी थी। सवाल यह है कि जब देश की सबसे बड़ी परीक्षाओं में से एक नीट का प्रश्नपत्र लीक हो सकता है तब युवा आखिर किस व्यवस्था पर भरोसा करें?

मंच के पीछे खड़ी है करोड़ों युवाओं की नाराजगी?

कॉकरोच आंदोलन की सबसे बड़ी ताकत उसका प्रतीकवाद है। दावा किया जा रहा है कि देश के करोड़ों युवाओं की नाराजगी इस मंच के पीछे खड़ी है। संकेत मिल रहे है कि सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षा सुधार की आवाज माने जाने वाले सोनम वांगचुक इस आंदोलन से खुलकर जुड़ रहे है यदि ऐसा होता है तो यह सिर्फ एक परीक्षा घोटाले का विरोध नहीं रहेगा बल्कि जवाबदेही बनाम सत्ता का बड़ा संघर्ष बन सकता है। दिलचस्प बात यह भी है कि पिछले एक साल में रोजगार, भर्ती परीक्षाओं, पेपर लीक और युवाओं के भविष्य से जुड़े मुद्दों ने लगातार सरकार को घेरा है। ऐसे में अगर यह आंदोलन सड़कों पर उतरता है तो इसका राजनीतिक असर केवल शिक्षा मंत्रालय तक सीमित नहीं रहेगा। मोदी सरकार के सामने चुनौती सिर्फ विपक्ष नहीं है। चुनौती उस युवा वर्ग की नाराजगी है जिसने कभी बड़े सपने और बड़ी उम्मीदें लेकर व्यवस्था पर भरोसा किया था। अब बड़ा सवाल यह है कि क्या सरकार समय रहते इस गुस्से को सुन पाएगी या फिर यह असंतोष एक बड़े राजनीतिक विस्फोट में बदल जाएगा। आने वाले कुछ घंटे तय करेंगे कि यह केवल सोशल मीडिया की हलचल है या फिर भारतीय राजनीति के अगले बड़े आंदोलन की दस्तक।

45 बड़े पेपर लीक कार्रवाई के नाम पर खानापूर्ति

अब तक दर्जनों बड़े पेपर लीक मामले सामने आये हैं। रिकॉर्ड बताता है कि सिस्टम की नाकामी बार-बार सामने आयी लेकिन जवाबदेही का दायरा सिर्फ निचले स्तर तक ही सीमित रहा। कुछ अधिकारियों को हटाया गया, कुछ के खिलाफ जांच शुरू हुई लेकिन बहुत कम मामलों में ऐसी सख्त कार्रवाई देखने को मिली जिसने भविष्य के लिए मिसाल कायम की हो। 2024 का यूजीसी नीट पेपर लीक हो, यूपीपीएससी आरओ एआरओ परीक्षा विवाद हो या फिर यूपी पुलिस कांस्टेबल भर्ती परीक्षा का मामला। हर जगह एक जैसी कहानी दिखायी दी। परीक्षा रद्द हुई, लाखों अभ्यर्थियों को दोबारा तैयारी करनी पड़ी सरकारों पर सवाल उठे और संबंधित अधिकारियों को हटाने या जांच के दायरे में लाने की कार्रवाई हुई। लेकिन सवाल यह है कि क्या केवल पद से हटाना ही पर्याप्त सजा है? बिहार पुलिस कांस्टेबल भर्ती से लेकर राजस्थान लोक सेवा आयोग और उससे पहले के कई चर्चित मामलों तक देखें तो एक पैटर्न साफ नजर आता है। पेपर लीक कोई एक दिन की घटना नहीं होती। इसके पीछे पूरा नेटवर्क, अंदरूनी मिलीभगत, तकनीकी खामियां और प्रशासनिक लापरवाही काम करती है। इसके बावजूद अवसर कार्रवाई का फोकस कुछ व्यक्तियों तक सीमित रह जाता है जबकि व्यवस्था की खामियां जस की तस बनी रहती है। सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि हर पेपर लीक के बाद सरकारें जीरो टॉलरेंस की बात करती हैं लेकिन कुछ महीनों बाद कोई नया भर्ती घोटाला या परीक्षा विवाद फिर सुर्खियों में आ जाता है। इसका मतलब साफ है कि बीमारी की जड़ अभी भी बची हुई है।

राहुल की भविष्यवाणी क्या सचमुच मोदी युग ढलान पर है?

राजनीति में भविष्यवाणियां नई बात नहीं हैं। लेकिन जब विपक्ष का सबसे बड़ा चेहरा यह कहे कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का राजनीतिक सूर्य अस्त होने की ओर है और वह सत्ता की कुर्सी छोड़ने को मजबूर हो सकते हैं तो बयान केवल बयान नहीं रह जाता वह राष्ट्रीय बहस का विषय बन जाता है। राहुल गांधी पिछले कुछ समय से लगातार दावा कर रहे हैं कि देश में बदलाव की लहर बन रही है। उनका तर्क है कि बेरोजगारी, महंगाई, भर्ती घोटाले, पेपर लीक, किसानों की नाराजगी और आर्थिक असंतोष धीरे-धीरे सरकार की सबसे बड़ी कमजोरी बनते जा रहे हैं। राहुल का मानना है कि जनता के भीतर जमा हो रहा यह असंतोष आने वाले समय में राजनीतिक रूप से विस्फोटक साबित हो सकता है। लेकिन दूसरी तरफ तस्वीर का दूसरा पहलू भी है। नरेंद्र मोदी आज भी देश के सबसे लोकप्रिय नेताओं में गिने जाते हैं। भाजपा केंद्र में लगातार तीसरे कार्यकाल में है और कई राज्यों में उसकी मजबूत राजनीतिक पकड़ कायम है। फिर भी राहुल गांधी की बातों को पूरी तरह नजरअंदाज करना आसान नहीं है। इतिहास गवाह है कि कई बार सत्ता का सबसे मजबूत किला भी जनता के मूड बदलने पर अचानक हिल जाता है। 1977 में इंदिरा गांधी की हार हो या 2004 में अटल बिहारी वाजपेयी सरकार का अप्रत्याशित पतन, भारतीय राजनीति ने कई बार बड़े-बड़े पूर्वानुमानों को गलत साबित किया है। यही वजह है कि राहुल गांधी की भविष्यवाणी को केवल विपक्षी बयान कहकर खारिज नहीं किया जा सकता। असली सवाल यह नहीं है कि मोदी कुर्सी छोड़ेंगे या नहीं। असली सवाल यह है कि क्या सरकार उन मुद्दों का समाधान कर पाएगी जो युवाओं, किसानों और मध्यम वर्ग के भीतर असंतोष पैदा कर रहे हैं। क्योंकि लोकतंत्र में सिंहासन चुनाव जीतने से मिलता है, लेकिन उसे बचाए रखने के लिए जनता का भरोसा जीतते रहना पड़ता है। और राजनीति का सबसे बड़ा सच यही है कि यहां कोई भी कुर्सी स्थायी नहीं होती।

भाजपा के जलापूर्ति के दावे जमीनी हकीकत से हैं कोसों दूर: अखिलेश

» सपा प्रमुख पानी संकट पर योगी सरकार को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। गर्मी के बढ़त ही राज्य में पानी का संकट पैदा होग गया है। इसी के नाथ विपक्ष ने भाजपा सरकार को घेरना शुरू कर दिया। चित्रकूट में पानी की समस्या को लेकर सपा ने सरकार पर सवाल दागा है। सपा प्रमुख ने आरोप लगाया गया कि विकास और जलापूर्ति योजनाओं के दावे जमीन पर सफल नहीं दिख रहे हैं। पेयजल संकट, अधूरी परियोजनाओं और बुनियादी सुविधाओं को लेकर सवाल उठाए गए, जबकि नदियों की सफाई और पूर्व विकास कार्यों का भी उल्लेख किया गया।

सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा, चित्रकूट में पानी के लिए तरसते बुजुर्गों, महिलाओं और बच्चों की दयनीय हालत देखकर भाजपा के विकास का दावा अंडरग्राउंड हो गया है। जनता कह रही है हमें आज पानी दे दीजिए, हम 47 के विकसित भारत के सपने को लेकर क्या करेंगे।

'हर घर जल' का नारा सिर्फ दीवारों पर ही लिखा मिलेगा

उन्होंने कहा कि जब तक भाजपा का शासन रहेगा तब तक 'जल जीवन मिशन' की टंकियां गिरती रहेंगी और 'हर घर जल' का नारा दीवारों पर ही लिखा मिलेगा। अब फिर कोई किसी 'स्वतंत्र' को बंधक बनाएगा तो भाजपाई कहेंगे, ये ठीक नहीं किया। अखिलेश यादव ने आरोप लगाए कि भाजपा सरकार में केवल बजट की लूट हुई है। सारा पैसा भाजपाईयों की कमीशनखोरी में बंट जाता है। इसीलिए कहीं पानी की टंकियां गिर रही हैं तो कहीं पुल गिर रहे हैं, और स?कें टूट रही हैं।

आरोप लगाया कि भाजपा मां गंगा को भी साफ नहीं कर पायी। यमुना नदी का बुरा हाल है। नदियों की सफाई और शहर में नदी साफ बनाने के लिए लखनऊ में गोमती रिवर फ्रंट एक उदाहरण है। कहा कि सपा सरकार ने नदियों की सफाई के लिए ऐतिहासिक काम किया था। गोमती नदी पर विश्वस्तरीय रिवरफ्रंट बनाया गया। नदियों को साफ रखने का यही तरीका है।

कोई नदी साफ नहीं हुई

प्रश्नपत्र लीक मामले में सरकार एक श्वेत पत्र जारी करे: दिग्विजय सिंह

» बोले कांग्रेस नेता- आधिकारिक जानकारी के अभाव में कई रिपोर्टें और अफवाहें सामने आई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिहं ने कहा कि फिलहाल प्रश्नपत्र लीक से संबंधित मामलों पर सीबीआई, केंद्र और राज्य सरकारों की अन्य जांच एजेंसियों द्वारा उन पर की जा रही कार्रवाई का कोई समेकित सार्वजनिक रिकॉर्ड मौजूद नहीं है। उन्होंने आगे कहा, भारत के छात्रों को न्याय दिलाने के लिए प्रशासन की क्षमता और तत्परता में नए सिरे से विश्वास जगाने के लिए मैं प्रस्ताव करता हूं कि भारत सरकार एक श्वेत पत्र जारी करे, जिसमें पिछले आठ वर्षों में एनटीए द्वारा आयोजित परीक्षाओं में हुई पेपर लीक और/या अनियमितताओं की घटनाओं की सूची दर्ज हो।

सिंह ने बताया कि आधिकारिक जानकारी के अभाव में कई रिपोर्टें और अफवाहें सामने आई हैं जिन्होंने उनकी जगह ले ली है। उन्होंने कहा, उदाहरण के लिए, मुझे बार-बार यह शिकायत मिली है कि हजारीबाग में हुएनीट-यूजी 24 के पेपर लीक मामले का मुख्य आरोपी संजीव कुमार उर्फ मुखिया कथित तौर पर जमानत पर बाहर है। इसी तरह, सीबीआई ने कथित तौर पर एक क्लोजर रिपोर्ट दाखिल की है, जिसमें कहा गया है कि 24 की नीट-नीट परीक्षा में कोई अनियमितता नहीं हुई थी, जिसे राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) ने उस समय रद्द कर दिया था। संह ने बताया कि जब दिल्ली की एक अदालत ने सीबीआई से अपनी क्लोजर रिपोर्ट के लिए लिखित स्पष्टीकरण मांगा, तो सीबीआई ने और समय मांगा। सिंह ने कहा कि सीबीआई द्वारा स्पष्टीकरण देने में देरी से भारत के छात्रों के बीच भी नकारात्मक संदेश गया है।

क्लोजर रिपोर्ट क्यों दाखिल की गई

उन्होंने कहा कि श्वेत पत्र में एनटीए और जांच एजेंसियों द्वारा की गई कार्रवाई की सूची भी होनी चाहिए, जिसमें प्रत्येक जांच के लिए गिरफ्तार किए गए लोगों के नाम शामिल हों। चाहे वह चल रही हो या पूरी हो चुकी हो, और क्या जांच एजेंसी द्वारा आरोपपत्र या समापन रिपोर्ट दायर की गई है। सिंह ने कहा कि इसमें यह भी बताया जाना चाहिए कि क्लोजर रिपोर्ट क्यों दाखिल की गई होगी और साथ ही हर आरोपी की स्थिति रिपोर्ट और उनकी वर्तमान स्थिति (मुकदमा चल रहा है, जमानत पर है, दोषी ठहराया गया है, आदि) भी दी जानी चाहिए। उन्होंने आगे कहा मुझे विश्वास है कि आप यहां उठाए गए मुद्दों पर उतनी ही जल्द ध्यान देंगे जितने वह हकदार हैं।

पंजाब के मजीठा में सियासी जंग तेज, आप और शिअद में रार

» पहले लगे बिक्रम मजीठिया भगोड़ा, जवाब में अब लगे टाइगर अभी जिंदा है के पोस्टर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अमृतसर । शिरोमणि अकाली दल के वरिष्ठ नेता बिक्रम सिंह मजीठिया को लेकर मजीठा हल्के में सियासी पोस्टरबाजी लगातार तेज होती जा रही है। कुछ दिन पहले क्षेत्र में मजीठिया को भगोड़ा बताने वाले पोस्टर और होर्डिंग लगाए गए थे। इसके जवाब में अब उनके समर्थकों की ओर से टाइगर अभी जिंदा है लिखे पोस्टर लगाए गए हैं। इन पोस्टरों के सामने आने के बाद इलाके में राजनीतिक चर्चाएं और तेज हो गई हैं।

समर्थकों का कहना है कि पोस्टरों के जरिए यह संदेश दिया गया है कि राजनीतिक और कानूनी चुनौतियों के बावजूद बिक्रम सिंह मजीठिया का जनाधार कायम है। वहीं विरोधी दल इसे राजनीतिक संदेशबाजी करार दे रहे हैं। गौरतलब है कि हाल ही में थाना मजीठा में हिरासत में लिए गए अकाली कार्यकर्ता जोबनप्रीत सिंह को छुड़वाने के मामले को लेकर बिक्रम सिंह मजीठिया के खिलाफ एफआईआर दर्ज हुई है। जिसके

बाद पुलिस लगातार गिरफ्तारी के लिए रेड कर रही है। इसी के बाद से मजीठिया को लेकर राजनीतिक बयानबाजी और पोस्टरबाजी लगातार जारी है। एक ओर विरोधी पक्ष मजीठिया को घेरने की कोशिश कर रहा है, वहीं दूसरी ओर समर्थक पोस्टरों और सार्वजनिक संदेशों के जरिए उनके समर्थन का प्रदर्शन कर रहे हैं। फिलहाल मजीठा हल्के में लगी यह नई पोस्टर श्रृंखला लोगों और राजनीतिक हलकों में चर्चा का विषय बनी हुई है।

सरकार की कानून-व्यवस्था पर बोलने से पहले आप 10 बार सोचें अखिलेश: राजभर

नेताजी का पुराना बयान पोस्ट कर सुभासपा प्रमुख ने सपा मुखिया पर साधा निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजनीति में इस समय विधानसभा चुनाव से पहले आरोप-प्रत्यारोप का दौर जारी है। इसी क्रम में कैबिनेट मंत्री और सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर ने समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव पर निशाना साधा है कैबिनट मंत्री ओम प्रकाश राजभर ने एक्स पर पोस्ट करते हुए मुलायम सिंह यादव का जिक्र करते हुए सपा चीफ पर तंज कसा है।

सुभासपा प्रमुख ओम प्रकाश राजभर ने एक्स पर लिखा- अखिलेश यादव दी आज मैं आपसे कुछ कहूंगा नहीं, बल्कि याद दिलाउंगा आपके बाबूजी की बात, जो उन्होंने भरे मंच से आपकी सरकार के बारे में कहा था आपको याद है 4 जून 2013 को स्वर्गीय मुलायम सिंह यादव ने आपकी सरकार के विषय में क्या कहा था? आपके बाबू जी की बात प्रमाण के साथ आपके सामने रख रहा हूं। यह खबर 5 जून13 को इंडियन एक्सप्रेस ने छापी थी, जोकि अंग्रेजी में है। कैबिनेट मंत्री

राजभर ने कहा-आप तो ऑस्ट्रेलिया से पढ़े हैं। तो उम्मीद करता हूं कि अंग्रेजी आपको आती ही होगी, ध्यान से पढ़िएगा, एक बार पढ़ लेंगे तो दोबारा हमारी सरकार की कानून व्यवस्था पर बोलने से पहले आप 10 बार सोचेंगे। शायद आप खुद से आंख भी न मिला पाएं, और हां सपाई लोडरों ये खबर तुम्हारे लिए नहीं है। क्योंकि यह अंग्रेजी में है और तुम लोग अपने भइया के राज में नकल मारके पास हुए हो, इसलिए तुम लोगों को कुछ समझ में आएगा नहीं। तुम्हारे हिस्से की भी अंग्रेजी भइया पढ़ डाले हैं, बेकार में परेशान होगे और ट्रांसलेटर ढूंढते फिरोगे, इसलिए तुम लोगों के लिए एक स्क्रीनशॉट भी लगा रहा हूं, पढ़ लेना हिंदी में है। वहीं सुभासपा प्रमुख ओपी राजभर ने कहा कि यह तय है कि सपा में एनडीए का मुकाबला करने की ताकत नहीं है, पिछले पाँच सालों में सरकार अखिलेश यादव ने चलाई थी और आरोप है कि शासन मुख्य रूप से एक खास समुदाय पर केंद्रित था, इसीलिए लोग उनसे दूरी बनाए रखते हैं,यह भी आरोप है कि पांच साल के दौरान लगभग 100 दंगे हुए।बता दें कि इस समय ओम प्रकाश राजभर अखिलेश यादव पर हमलावर हैं। हाल ही में आजमगढ़ से पाकिस्तान समर्थित आतंकी नेटवर्क से जुड़े एक संदिग्ध की गिरफ्तारी पर भी ओपी राजभर ने सपा पर निशाना साधा था। उन्होंने कहा कि सपा के गढ़ से आतंकी पकड़ा जाना दुर्भाग्यपूर्ण है।

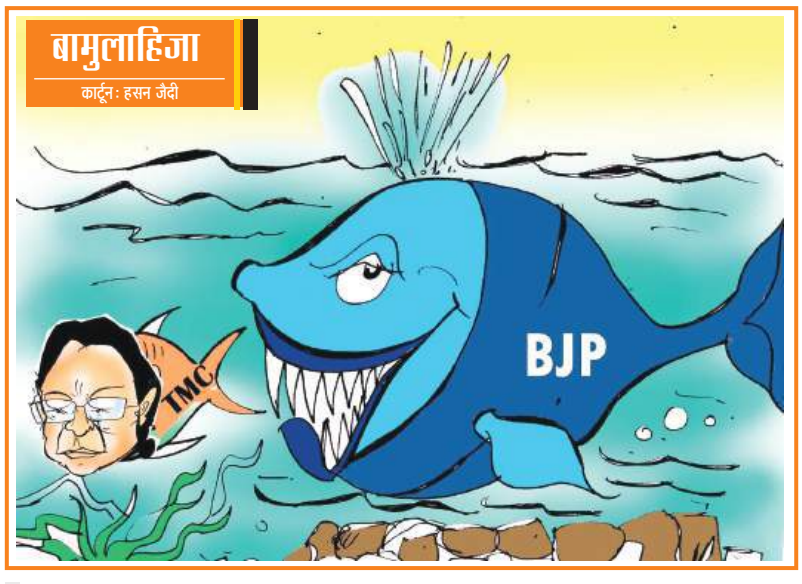

शिक्षा में पंजाब ने केरल को पछाड़ा: केजरीवाल

» आप आने वाले समय में राज्य को आगे ले जाएगी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने शिक्षा क्षेत्र में पंजाब के प्रदर्शन की सराहना करते हुए दावा किया कि नीति आयोग के सर्वेक्षण में राज्य ने केरल को पीछे छोड़ते हुए देश में शीर्ष स्थान हासिल किया है।

एक्स पर एक पोस्ट में केजरीवाल ने कहा कि पंजाब, जो पहले एक मूल्यांकन में 27वें स्थान पर था, अब 22 में आप सरकार के सत्ता में आने के चार साल के भीतर ही शिक्षा के क्षेत्र में पहले स्थान पर पहुंच गया

है। केजरीवाल ने कहा कि पंजाब, जो कभी सरकारी स्कूलों की शिक्षा में 27वें स्थान पर था, अब पहले स्थान पर पहुंच गया है। इसने केरल जैसे राज्यों को भी पीछे छोड़ दिया है। हमारी सरकार 22 में बनी थी। और 2020 के सर्वेक्षण में पंजाब 27वें स्थान पर था। 27वें स्थान से पहले स्थान तक पहुंचने में हमारी सरकार को केवल चार साल लगे हैं। सरकारी स्कूलों में इसे ऐतिहासिक परिवर्तन बताते हुए, आम आदमी पार्टी के नेता ने कहा कि यह उपलब्धि शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा सुधारों पर पार्टी के फोकस को दर्शाती है। उन्होंने कहा कि आज मैं आपको एक खुशखबरी देना चाहता हूँ। पंजाब ने पूरे देश में शिक्षा के क्षेत्र में पहला स्थान प्राप्त किया है। यह हमारा सर्वेक्षण नहीं है; यह केंद्र सरकार के नीति आयोग का शिक्षा सर्वेक्षण है। महज चार वर्षों में 27वें स्थान से पहले स्थान पर आना बहुत बड़ी उपलब्धि है। इससे बहुत उम्मीद जगती है। अगर हम चाहें तो यह कर सकते हैं। यह इरादे की बात है। अगर इरादा हो तो कुछ भी संभव है। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि आम आदमी पार्टी ने दिल्ली और पंजाब में अपने शासन मॉडल का हवाला देते हुए शिक्षा और स्वास्थ्य को लगातार सर्वोच्च प्राथमिकता दी है।

राज्य सभा चुनावों के लिए दांव-पेंच जारी

बिहार, राजस्थान से लेकर कर्नाटक में बढ़ी हलचल

- सभी सियासी दलों के लिए रणनीति बननी शुरू
- 18 जून को 27 सीटों पर चुनाव
- दस राज्यों में हो रही हैं सीटें खाली

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। इसी महीने होने वाले राज्य सभा चुनावों के लिए रणनीति बननी शुरू हो गई। इस चुनाव के लिए बीजेपी व कांग्रेस समेत कई अन्य दलों ने कमर कस ली है। खास तौर भाजपा को कुछ राज्यों में क्रॉस वोटिंग पर का खतरा है। बता दे दस राज्यों की 27 राज्यसभा सीटों पर होने वाले चुनाव के लिए बीजेपी ने अपनी रणनीतिक तैयारियां तेज कर दी हैं। पार्टी की नजर कुछ खास राज्यों में विपक्षी विधायकों की संभावित क्रॉस वोटिंग पर है। 18 जून को राज्यसभा की 27 सीटों पर चुनाव होनें हैं।

हाल ही में पीएम मोदी की अध्यक्षता में उनके सरकारी निवास पर बीजेपी की केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक हुई। इसमें अन्य राजनीतिक विषयों के अलावा राज्य सभा चुनावों के लिए भी पार्टी की रणनीति पर विचार किया गया। पार्टी जल्दी ही अपने उम्मीदवारों के नामों का ऐलान करने जा रही है. केंद्र सरकार में दो राज्य मंत्रियों का राज्य सभा कार्यकाल भी इसी महीने समाप्त हो रहा है। मोदी मंत्रिपरिषद में संभावित फेरबदल की अटकलों के बीच यह भी देखा जा रहा है कि इन्हें दोबारा राज्यसभा दी जाती है या नहीं। उधर कांग्रेस ने अपनी रणनीति पर काम करना शुरू कर दिया है। हालांकि संख्याबल में वह बीजेपी के सामने कमजोर है पर क्रॉस वोटिंग करने वाले नेताओं पर उसकी निगाहें है।

नामांकन की अंतिम तिथि 8 जून

18 जून को होने जा रहे राज्यसभा चुनाव के लिए चुनाव आयोग अधिसूचना जारी कर रहा है और इसी के साथ नामांकन भरे जा सकेंगे। नामांकन की अंतिम तिथि 8 जून है। राज्यसभा चुनाव के इस दौर में 22 सीटों पर कार्यकाल पूरा होने के कारण जबकि तीन उपचुनाव कराए जा रहे हैं।

केंद्रीय मंत्रियों पर खतरा मंडराया

केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण और रेलवे राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू राजस्थान से राज्यसभा सांसद हैं। उनका कार्यकाल 21 जून को समाप्त हो रहा है। इसी तरह अल्पसंख्यक मामलों और मत्स्य पालन मंत्रालय में राज्यमंत्री जॉर्ज कूरियन मध्य प्रदेश से राज्यसभा सांसद हैं। उनका कार्यकाल भी 21 जून को समाप्त हो रहा है। माना जा रहा है कि पंजाब विधानसभा चुनाव के मद्देनजर रवनीत सिंह को पार्टी दोबारा राज्य सभा भेज

सकती है। वहीं कूरियन को केरल चुनाव के मद्देनजर सरकार में लाया गया था। अब देखना होगा कि बीजेपी उन्हें फिर से राज्य सभा भेजती है या नहीं। केंद्रीय मंत्रिपरिषद में इन दोनों मंत्रियों का बना रहना इस बात पर निर्भर करेगा कि वे फिर से राज्य सभा में आते हैं या नहीं। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, पूर्व प्रधानमंत्री एच डी देवेगौड़ा, मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह, केंद्रीय मंत्री जॉर्ज कूरियन, और रवनीत सिंह बिट्टू आदि का कार्यकाल समाप्त हो रहा है।

बिहार विधानपरिषद चुनाव का समीकरण

सीटों के समीकरण को समझें तो विधानपरिषद की 9 सीटों पर चुनाव होने हैं। इस लिहाज के एक सीट के लिए 25 वोटों की जरूरत होगी। किसे कितने वोट चाहिए होंगे और किसकी कितनी सीटों पर जीत तय है। इस लिहाज से बिहार विधान परिषद चुनाव में अगर एआईएमआईएम ने अपना कैंडिडेट खड़ा कर दिया तो भी तेजस्वी यादव और बाकी

विपक्ष के पास 36 वोट (बसपा के एक एमएलसी को मिलाकर) रहेंगे। लेकिन सूरत अगर राज्यसभा चुनाव की तरह रही तो तेजस्वी यादव के पास 36 माइनस 4 यानी 32 वोट ही बचेंगे। अगर कांग्रेस के 3 और राजद के 1 यानी (राज्यसभा चुनाव में इन 4 ने वोट नहीं डाला था) के अलावा और विधायक खेल कर गए तो राजद उम्मीदवार (संभावित) नहीं जीत पाएंगे। दूसरी वरीयता के वोटों से भी फर्क पड़ेगा, क्योंकि राज्यसभा में भी यही हुआ था।

राजद ने समर्थन नहीं किया तो एआईएमआईएम अपना उम्मीदवार उतारेगा

अख्तरुल ईमान से ये सवाल पूछा कि अगर तेजस्वी यादव उनका समर्थन नहीं करते हैं तब वो क्या करेंगे। इस पर अख्तरुल ईमान ने कहा कि ऐसा होने की सूरत में पार्टी में बिहार विधानपरिषद चुनाव में अपना उम्मीदवार भी उतार सकती है। हालांकि अभी वो तेजस्वी यादव के जवाब का इंतजार करेंगे, फिर जवाब के हिसाब से पार्टी के नेता मिल बैठकर इसका फैसला करेंगे कि आगे क्या करना है।

राज्यसभा के बदले विधानपरिषद में जगह चाहती है औवैसी

ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के बिहार प्रदेश अध्यक्ष और अमौर विधायक अख्तरुल ईमान ने कहा कि हमने राज्यसभा चुनाव में बतौर विपक्ष तेजस्वी यादव के उम्मीदवार का समर्थन किया था, ऐसे में अब विधानपरिषद में उन्हें समर्थन करना चाहिए। अख्तरुल ईमान के मुताबिक ये नैतिक जवाबदेही ही नहीं बल्कि एक जिम्मेदारी भी है, जिसके राजद को निभाना चाहिए। जब उन्हें राज्यसभा में जरूरत थी तो हमने उन्हें समर्थन दिया था। हमारे 5 विधायक चट्टान की तरह राजद उम्मीदवार अमरेंद्र धारी सिंह के साथ खड़े रहे। अब विधानपरिषद

में तेजस्वी यादव को हमारा समर्थन करना चाहिए। हमें उनके जवाब का इंतजार है। इस तरह से अख्तरुल ईमान ने साफ-साफ कह दिया है कि इस बार विधानपरिषद में विपक्ष की एकमात्र सीट का उम्मीदवार एआईएमआईएम से होना चाहिए।

कांग्रेस अध्यक्ष खरगे की वापसी

कर्नाटक से संख्या बल के हिसाब से कांग्रेस को तीन सीटें मिल सकती हैं। इनमें से एक पर पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे का चुना जाना तय माना जा रहा है, राजस्थान में बीजेपी को दो और कांग्रेस को एक सीट मिल सकती है। बीजेपी की ओर से केंद्रीय राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू और कांग्रेस की ओर से पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और पार्टी प्रवक्ता पवन खेड़ा का नाम चल रहा है।

बिहार में रास चुनाव को लेकर हलचल तेज

बिहार में राज्यसभा चुनाव में हार का मुंह देख चुके तेजस्वी यादव के लिए ये खबर अच्छी तो कतई नहीं कही जा सकती। बिहार विधानपरिषद के चुनाव में वो एक ही नेता को ऊपरी सदन में भेज सकते हैं। लेकिन अब असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी ने उनसे राज्यसभा में समर्थन का अहसान चुकाने को कहा है।

एनडीए को राज्यसभा में आंकड़ा डेढ़ सौ पार होने की उम्मीद

एनडीए को उम्मीद है कि इस दौर के चुनाव के बाद राज्यसभा में उसका आंकड़ा डेढ़ सौ पार हो जाएगा और वह दो-तिहाई बहुमत के नजदीक पहुंच जाएगा। इस महीने बीजेपी के 11 और उसके सहयोगी दलों के तीन सांसद रिटायर हो रहे हैं। जबकि बीजेपी की सहयोगी एनसीपी की नेता और महाराष्ट्र की उपमुख्यमंत्री सुनेत्रा पवार के इस्तीफे से खाली सीट पर उपचुनाव हो रहा है। वहीं ओडिशा में बीजेडी के सांसद देबाशीष सामंतरे इस्तीफा देकर बीजेपी में शामिल हो गए। अब उनकी सीट पर भी उपचुनाव कराया जा रहा है। माना जा रहा है कि 27 में से एनडीए को 17-18 सीटें मिल सकती हैं। इस तरह एनडीए राज्य सभा में डेढ़ सौ का आंकड़ा पार कर लेगा जो अभी 148 पर है। सबसे अधिक फायदा टीडीपी को होगा।

भाजपा के संभावित उम्मीदवार

बीजेपी अपनी एक सीट पर रवनीत सिंह बिट्टू को रिपीट कर सकती है। दूसरी सीट के लिए पार्टी जातिगत और क्षेत्रीय समीकरण साध रही है। चर्चा में पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ (शेखावाटी), पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया (ओबीसी चेहरा), राष्ट्रीय सचिव अलका गुर्जर (महिला + गुर्जर चेहरा), सुनीता बैसला (गुर्जर समाज) और नरसी कुलरिया (बीकानेर, संघ बैकग्राउंड) के नाम मुख्य रूप से शामिल हैं। कोर कमेटी की बैठक में प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को उम्मीदवार पैनल बनाने का अधिकार दिया गया है, लेकिन अंतिम फैसला दिल्ली से होगा।

मध्य प्रदेश में कांग्रेस के विधायकों पर नजर

कुछ राज्यों में क्रॉस वोटिंग की नौबत आ सकती है। खासतौर से मध्य प्रदेश में कांग्रेस के विधायकों पर नजर रहेगी जहां मौजूदा संख्या बल के हिसाब से कांग्रेस तीन में से एक सीट जीतने की स्थिति में है लेकिन उसे इसके लिए जोर लगाना पड़ेगा। हालांकि उसके पास केवल छह सरप्लस वोट हैं। ऐसे

में किसी वरिष्ठ नेता पर दांव लगाया जा सकता है। खुद दिग्विजय सिंह फिर से राज्यसभा जाने से इनकार कर चुके हैं। राज्य में दो सीटें बीजेपी और एक कांग्रेस को मिल सकती है। बीजेपी की ओर से केंद्रीय राज्य मंत्री जॉर्ज कूरियन भी दौड़ में हैं जिनका कार्यकाल इस महीने समाप्त हो रहा है।

कांग्रेस का उम्मीदवार

कांग्रेस की ओर से नीरज डांगी एक बार फिर मैदान में रह सकते हैं। निर्वाचन आयोग के कार्यक्रम के अनुसार चुनाव की अधिसूचना 1 जून 2026 को जारी होगी। नामांकन 8 जून तक, नाम वापसी 11 जून, मतदान- 18 जून 2026 (सुबह 9 से शाम 4 बजे तक) और मतगणना उसी दिन शाम 5 बजे से होगी।

जिद... सच की

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

एआई की अंधी दौड़ में मानवता को रौंद डालेगा

एआई की अंधी दौड़ में मानवता, संवेदना और नैतिकता का क्षरण न होने दिया जाए। पोप ने विशेष रूप से इस बात पर चिंता व्यक्त की कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल तकनीकी परिवर्तन का माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि यह युद्ध, राजनीति, अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना को प्रभावित करने वाली शक्ति बनती जा रही है।

एआई आज पूरी दुनिया को तरक्की का एहसास करा रहा है। पर उसका स्याह पक्ष भी सामने आने लगा है। वह मानवीय काम को आसान तो कर रहा हे पर मानवीय सभ्यता को नुकसान होने के संकेत देने लगा है। धर्मगुरु पोप ने सामाजिक और वैश्विक मुद्दों पर जारी अपने आधिकारिक संदेश में एआई को मानवता के समक्ष उभरती सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक बताया। मतलब कि दुनिया ही भारत को भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अंधाधुन दौड़ में भागने से बचना होगा। एआई की अंधी दौड़ में मानवता, संवेदना और नैतिकता का क्षरण न होने दिया जाए। पोप ने विशेष रूप से इस बात पर चिंता व्यक्त की कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल तकनीकी परिवर्तन का माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि यह युद्ध, राजनीति, अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना को प्रभावित करने वाली शक्ति बनती जा रही है। उन्होंने दुनिया को चेताया कि तकनीक का उद्देश्य मनुष्य पर प्रभुत्व स्थापित करना नहीं, बल्कि उसकी सेवा करना होना चाहिए।

बता दें कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी एआई आज केवल एक तकनीकी उपलब्धि नहीं रह गई है, बल्कि वह मानव सभ्यता के भविष्य का निर्णायक मोड़ बनती जा रही है। जिस गति से यह तकनीक विकसित हुई है, उसने दुनिया को आश्चर्यचकित भी किया है और चिंतित भी। अभी तक विज्ञान और तकनीक मनुष्य के हाथों में उपकरण थे, किंतु कृत्रिम बुद्धिमत्ता पहली ऐसी शक्ति है जो निर्णय लेने, सीखने, विश्लेषण करने और सृजन करने की क्षमता के साथ स्वयं को निरंतर विकसित कर रही है। यही कारण है कि विश्व के प्रमुख धर्मगुरु, वैज्ञानिक और नीति-निर्माता इसके खतरों को लेकर गंभीर चेतावनियां दे रहे हैं। हाल ही में वर्तमान पोप लियो चौदहवें द्वारा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संदर्भ में व्यक्त की गई चिंताएं अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने स्पष्ट कहा कि युद्ध को नैतिक नहीं बनाया जा सकता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित युद्ध प्रणाली मानवता के लिए गंभीर खतरा बन सकती है। यह चेतावनी केवल धार्मिक दृष्टि नहीं, बल्कि मानवीय अस्तित्व की रक्षा का प्रश्न है। दुनिया को इसे गंभीरता से लेने की आवश्यकता है। आज भी मानव-केंद्रित विकास की अवधारणा को बल देना जरूरी है, जिसमें विज्ञान और तकनीक को नैतिकता, मानवीय गरिमा और करुणा के अधीन रखा जाए। यह चेतावनी केवल धार्मिक दृष्टिकोण नहीं है, बल्कि एक वैश्विक मानवीय आह्वान है कि एआई की अंधी दौड़ में मानवता, संवेदना और नैतिकता का क्षरण न होने दिया जाए। आज जब महाशक्तियां एआई के माध्यम से प्रभाव और नियंत्रण की प्रतिस्पर्धा में लगी हैं, तब पोप का यह संदेश विश्व समुदाय को संयम, उत्तरदायित्व और मानवीय मूल्यों की ओर लौटने का मार्ग दिखाता है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

चीन की दूरदृष्टि से सबक लेने की जरूरत

गुरबचन जगत

ब्लूमबर्ग न्यूज की 28 जनवरी, 2026 की खबर के अनुसार, चीन ने पिछले साल सभी तकनीकी क्षेत्रों में 543 गीगावाट जितनी नई बिजली उत्पादन क्षमता जोड़ी है। रिपोर्ट में कहा गया है कि यह भारत में 2024 के आखिर तक के पैदा हुए कुल बिजली उत्पादन से 12 प्रतिशत ज़्यादा है। चीन की इस बढ़ोतरी में 80 फीसदी से ज्यादा हिस्सा अक्षय ऊर्जा का था, जिसमें सोलर व पवन ऊर्जा शामिल हैं। वहीं यूएस एनर्जी इन्फॉर्मेशन एडमिनिस्ट्रेशन के अनुसार, चीन के पास दुनिया का सबसे बड़ा रणनीतिक तेल भंडार है (लगभग 1.4 अरब बैरल)। दिलचस्प कि उसने 25 में अपने तेल भंडारण में काफ़ी वृद्धि की, और रूस, ईरान और वेनेज़ुएला से रियायती दरों पर करोड़ों बैरल तेल खरीदा।

जबकि भारत के पास सिर्फ़ 21 मिलियन बैरल का तेल भंडार था। पिछले कुछ दशकों में, चीन ने रेयर अर्थ मिनरल्स, इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) उत्पादन, लिथियम-आयन बैट्री उत्पादन और क्लीन एनर्जी के क्षेत्र में अपनी जबरदस्त रणनीतिक बढ़त बनाई है। चीनी लोग इस समूची मूल्य संवर्धन श्रृंखला में अब दुनियाभर में अग्रणी हैं। ऐसा कर उन्होंने न केवल जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम की और प्रदूषण घटाया बल्कि जीवाश्म ईंधन से दूर हटती दुनिया के दौर में अपनी बहुत मजबूत स्थिति भी बना ली। रेयर अर्थ मिनरल, ईवी निर्माण, बैट्री उत्पादन व स्वच्छ ऊर्जा की यह तिकड़ी, किसी अर्थव्यवस्था की जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता खत्म करने का 'सबसे अहम माध्यम' है। यह सब सावधानी से की गई योजनाबंदी से हासिल हो पाया, जिसे पंचवर्षीय योजनाओं में विशेष स्थान दिया गया (अभी वहां 15वीं योजना चल रही है)। ये योजनाएं चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति और राज्य परिषद (चीनी कैबिनेट) मिलकर बनाती हैं। यह रणनीतिक बढ़त ही तय करेगी कि देश आगामी ऊर्जा संकट से कैसे निबटेगा। यह ऊंची और नीची महंगाई दर वाले देशों के बीच का फ़र्क बनाता है, और यह तय करने में एक अहम भूमिका निभाएगा कि एआई के युग में डेटा सेंटर कहां स्थापित होंगे, क्योंकि स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन, भंडारण, रेयर अर्थ मिनरल और डेटा सेंटरों के बीच एक रणनीतिक सांझ है।

बीते साल चीन ने अपने रणनीतिक अस्त्र का इस्तेमाल किया व रेयर अर्थ के निर्यात पर रोक लगाकर भारत का ईवी उत्पादन करीब ठप कर दिया था (इस क्षेत्र में उसका लगभग एकाधिकार

है)। देश -अपनी सरकारों के जरिए- भविष्य के लिए योजना बनाते हैं। ऐसी योजना में विगत के और मौजूदा अनुभवों का गहराई से विश्लेषण करना शामिल होता है, साथ ही भविष्य के संभावित बदलावों के बारे में भी अनुमान भी लगाए जाते हैं। उपरोक्त अवयवों के आधार पर, सरकार भविष्य से निबटने को नीतियां बनाती है। जब हम खुद को और अपनी मौजूदा स्थिति को, खासकर ऊर्जा की स्थिति और उसके नतीजों के मामले में, देखते हैं, तो लगता है कि हमने पिछले कुछ दशक में जरूरी तैयारी नहीं की। इसलिए यह यकीनी बनाना केंद्र की जिम्मेदारी है कि आपात स्थिति में संसाधन उपलब्ध रहें, पर्याप्त भंडार बनाए, और इससे भी ज़्यादा ज़रूरी यह कि बड़े पैमाने पर हरित ऊर्जा अपनाएं, ताकि हम आयातित कच्चे तेल पर बिल्कुल निर्भर न रहें। जहां यह बात तसल्ली देने वाली है कि हमारी कुल बिजली उत्पादन क्षमता का आधा हिस्सा अब नवीकरणीय स्रोतों से आता है, लेकिन कोयला आधारित ऊर्जा उत्पादन का हिस्सा अभी भी सबसे अधिक (लगभग 42 प्रतिशत) है। अहम बात यह है कि यह अभी भी कुल बिजली खपत का 70 प्रतिशत हिस्सा मुहैया करवाता है, जबकि भारत ने अभी तक बिजली के भंडारण की पर्याप्त क्षमता विकसित नहीं की। जबकि चीन ने इस मामले में बहुत काम किया है। यह दशक लगातार उथल-पुथल भरा रहा। पहले कोविड महामारी, फिर पूर्वी यूरोप और पश्चिम एशिया युद्ध जो जारी हैं, और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का उद्भव। भारत औद्योगिक क्रांति करने से चूक गया था, उसे इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ी। देश '80 और '90 के दशक के कंप्यूटर-प्रधान युग के शुरुआती दौर में भी चूक कर गया; '90 के दशक के आर्थिक सुधार तब जाकर लागू किए, जब देश करीब दिवालिया होने की कगार पर पहुंच गया। शुक्र है, निजी क्षेत्र ने आगे बढ़कर जम्मिदारी संभाली, साथ ही तकनीकी विशेषज्ञों की बड़ी फौज ने भी स्थिति से उबारने में मदद की।

हालांकि भारत अभी सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट के क्षेत्र में बड़ा खिलाड़ी नहीं बन पाया, आईटी क्षेत्र में उसकी जगह अधिकांशत: सेवा आधारित क्षेत्र में ही है। हालांकि देर से हुई शुरुआत के मद्देनजर, काबिल-ए-तारीफ है कि हम इतनी प्रगति कर पाए। एआई से आ रहे बड़े बदलावों की बात करें तो, हमने एक बार फिर मौका गंवा डाला है और अब हम उसे तेजी से दूर जाते हुए देख सकते हैं।

टूटे समाजों में भरोसा लौटाने के लिए सम्मान

दिनेश भारद्वाज

दुनिया में सैनिकों की पहचान अक्सर युद्ध और सीमाओं से जुड़ी होती है। लेकिन कुछ सैनिक ऐसे भी होते हैं, जो वर्दी पहनकर केवल सुरक्षा ही नहीं देते, बल्कि भरोसा, संवेदनशीलता और उम्मीद भी बांटते हैं। भारतीय सेना में मेजर अभिलाषा बराक आज ऐसी ही पहचान बन चुकी हैं। संयुक्त राष्ट्र ने उन्हें वर्ष 2025 के प्रतिष्ठित 'यूएन मिलिट्री जेंडर एडवोकेट ऑफ द ईयर अवॉर्ड' के लिए चुना है। लेबनान में संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के दौरान महिलाओं और किशोरियों के बीच विश्वास निर्माण, संवाद और संवेदनशील नेतृत्व के लिए न्यूयॉर्क स्थित संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में उन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया गया। यह उपलब्धि सिर्फ एक सैन्य अधिकारी की सफलता नहीं है। यह उस भारत की कहानी है, जहां बेटियां अब केवल सपने नहीं देख रहीं, बल्कि दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित मंचों पर देश का प्रतिनिधित्व भी कर रही हैं।

अभिलाषा बराक का संबंध हरियाणा के रोहतक से है। उनका बचपन सेना के अनुशासन और देशभक्ति के माहौल में बीता। उनके पिता कर्नल एस. ओम सिंह भारतीय सेना में रहे हैं। परिवार की सैन्य परंपरा ने अभिलाषा के व्यक्तित्व को प्रभावित किया। तभी उनके भीतर देशसेवा केवल एक पेशा नहीं, बल्कि जीवन का लक्ष्य बनती चली गई। हालांकि उनका जन्म तमिलनाडु के वेलिंगटन स्थित सैन्य अस्पताल में हुआ, लेकिन परिवार की जड़ें रोहतक से जुड़ी रहीं। अभिलाषा ने जब भारतीय सेना की पहली महिला कॉम्बैट एविएटर बनकर इतिहास रचा, तब हरियाणा ने उन्हें गर्व के साथ 'रोहतक की बेटी' कहा। उन्होंने दिल्ली टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी से पढ़ाई की और बाद में चेन्नई की ऑफिसर्स ट्रेनिंग अकादमी से सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त किया। साल 2022 भारतीय सेना के इतिहास में एक अहम मोड़ आया, जब अभिलाषा भारतीय सेना की पहली महिला कॉम्बैट एविएटर बनीं। यह भारतीय सेना के बदलते स्वरूप का प्रतीक भी थी। लंबे समय तक सेना के लड़ाकू और एविएशन विंग को पुरुष प्रधान क्षेत्र माना जाता रहा।

महिलाओं की भूमिका सीमित समझी जाती थी। उन्होंने यह साबित किया कि साहस, नेतृत्व और क्षमता का कोई लिंग नहीं होता। उनकी इस उपलब्धि ने देशभर की हजारों लड़कियों को यह संदेश दिया कि अब भारतीय सेना में महिलाओं के लिए कोई 'सीलिंग' नहीं बची है। आज संयुक्त राष्ट्र के शांति मिशन केवल सैन्य कार्रवाई तक सीमित नहीं हैं। उनका उद्देश्य संघर्ष प्रभावित समाज में भरोसा बहाल करना भी है। लेबनान में संयुक्त राष्ट्र अंतरिम बल (यूएनआईएफआईएल) के तहत तैनात भारतीय बटालियन में अभिलाषा बराक महिला सहभागिता दल की कमांडर के रूप में कार्यरत हैं। युद्ध प्रभावित इलाकों में महिलाएं और बच्चियां सबसे ज्यादा असुरक्षित होती हैं। ऐसे क्षेत्रों में महिला सैनिकों की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण मानी जाती है, क्योंकि वे स्थानीय महिलाओं से ज्यादा सहज संवाद स्थापित कर पाती हैं। अभिलाषा बराक ने लेबनान में महिलाओं और किशोरियों के साथ संपर्क कार्यक्रम चलाए, सामुदायिक गतिविधियों में हिस्सा लिया और शांति सैनिकों को लैंगिक संवेदनशीलता का प्रशिक्षण भी दिया। उन्होंने यह दिखाया कि एक सैनिक केवल सुरक्षा का प्रतीक नहीं, बल्कि सामाजिक विश्वास का चेहरा भी हो सकता है।

संयुक्त राष्ट्र ने उनके इसी मानवीय नेतृत्व और संवेदनशील कार्यशैली को सम्मानित करने का फैसला किया। मेजर अभिलाषा बराक इस प्रतिष्ठित सम्मान को पाने वाली भारत की तीसरी महिला अधिकारी हैं। उनसे पहले सुमन गुवानी और राधिका सेन भी संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों में अपने उल्लेखनीय कार्यों के लिए सम्मानित हो चुकी हैं। मेजर सुमन गवानी को दक्षिण सूडान में महिलाओं के अधिकारों और सामुदायिक भागीदारी को मजबूत करने के लिए सम्मान मिला था। वहीं मेजर राधिका सेन ने संघर्ष प्रभावित क्षेत्रों में महिला सुरक्षा और सामाजिक भरोसा कायम करने की दिशा में अहम कार्य किया। अब अभिलाषा बराक का इस सूची में शामिल होना भारतीय महिला सैन्य नेतृत्व की निरंतर बढ़ती वैश्विक स्वीकार्यता का प्रमाण है। एक समय था जब हरियाणा को बेटियों के प्रति रूढ़ सोच वाले राज्य के रूप में देखा जाता था। लेकिन आज वही हरियाणा खेल, सेना, विज्ञान और प्रशासन में देश को नई पहचान देने वाली बेटियां दे रहा है। अभिलाषा बराक इसी बदलाव का सबसे मजबूत चेहरा हैं। उनकी उपलब्धि यह भी दिखाती है कि यदि अवसर, शिक्षा और विश्वास मिले तो भारतीय महिलाएं किसी भी क्षेत्र में विश्व स्तर पर नेतृत्व कर सकती हैं।

अभिलाषा बराक की सबसे बड़ी ताकत यही है कि उन्होंने सैनिक की कठोर छवि के भीतर मानवीय संवेदना को जीवित रखा। उन्होंने दिखाया कि शांति मिशन केवल सीमाओं की निगरानी नहीं, बल्कि टूटे हुए समाज में भरोसा लौटाने की जिम्मेदारी भी है। यही कारण है कि संयुक्त राष्ट्र ने उन्हें 'जेंडर एडवोकेट' यानी लैंगिक समानता की पैरोकार के रूप में सम्मानित करने का निर्णय लिया। आज जब युवा पीढ़ी त्वरित सफलता और सोशल मीडिया की चमक से प्रभावित है, तब मेजर अभिलाषा बराक जैसी शख्सियतें यह याद दिलाती हैं कि असली पहचान मेहनत, अनुशासन और सेवा से बनती है। अभिलाषा की कहानी केवल एक सैन्य अधिकारी की कहानी नहीं, बल्कि उस नए भारत की कहानी है जहां बेटियां सीमाएं नहीं, संभावनाएं देखती हैं। जहां वर्दी केवल ताकत का प्रतीक नहीं, बल्कि संवेदनशील नेतृत्व और मानवीय मूल्यों का चेहरा भी बन रही है।

घर पर ऐसे बनाएं शुद्ध

गरम और सब्जी मसाला

भारतीय किचन में मसालों का खास महत्व होता है। हल्दी, धनिया, जीरा और गरम मसाला जैसे मसाले ही खाने को स्वाद और खुशबू देते हैं। लेकिन हाल के समय में कई ब्रांड्स के मसाले क्वालिटी टेस्ट में फेल होने की खबरों ने लोगों को चिंता में डाल दिया है। ऐसे में कई लोग सोच रहे हैं कि आखिर शुद्ध मसाले कहां से खरीदें। इसका सबसे अच्छा और सुरक्षित तरीका है घर पर ही मसाला तैयार करना। घर में बना मसाला न सिर्फ ताजा होता है बल्कि इसमें मिलावट की चिंता भी नहीं रहती। मिलावटी मसालों की खबरों के बीच घर पर मसाला बनाना एक सुरक्षित और अच्छा विकल्प हो सकता है। अगर आप थोड़ी मेहनत करके गरम मसाला और सब्जी मसाला घर पर तैयार करते हैं, तो आपको शुद्ध, ताजा और स्वादिष्ट मसाला मिल सकता है जो आपके खाने को और भी खास बना देगा। घर में तैयार मसाले के कई फायदे होते हैं। मिलावट का खतरा नहीं होता है। मसाले ताजे और खुशबूदार होते हैं, स्वाद ज्यादा बेहतर होता है, जरूरत के हिसाब से मसाला तैयार किया जा सकता है।

गरम मसाला सामग्री

गरम मसाला बनाने के लिए 2 चम्मच जीरा, 2 चम्मच धनिया, 1 चम्मच काली मिर्च, 4-5 लौंग, 2 दालचीनी के टुकड़े, 3-4 हरी इलायची, 1 तेज पत्ता।

विधि

सबसे पहले सभी साबुत मसालों को धीमी आंच पर हल्का भून लें। जब इनसे खुशबू आने लगे तो गैस बंद कर दें। मसालों को ठंडा होने दें। अब इन्हें मिक्सर में डालकर बारीक पाउडर बना लें। तैयार गरम मसाला को एयरटाइट कंटेनर में रखें।

सब्जी मसाला सामग्री

3 चम्मच धनिया, 1 चम्मच जीरा, 1 चम्मच सौंफ, 1 चम्मच काली मिर्च, 1 चम्मच हल्दी पाउडर,1 चम्मच लाल मिर्च पाउडर, सब्जी मसाला बनाने की।

विधि

धनिया, जीरा और सौंफ को हल्का भून लें। इन्हें ठंडा होने दें और मिक्सर में पीस लें। अब इसमें हल्दी और लाल मिर्च पाउडर मिलाएं। सभी मसालों को अच्छी तरह मिलाकर एयरटाइट डिब्बे में रखें।

स्टोर करने का तरीका

अगर आप चाहते हैं कि मसाले लंबे समय तक ताजे रहें, तो इन बातों का ध्यान रखें। मसालों को हमेशा एयरटाइट कंटेनर में रखें, धूप और नमी से दूर रखें, कम मात्रा में बनाकर इस्तेमाल करें।

ऐसे बनाएं मुलायम और स्पंजी

दही बड़ा

दही बड़ा एक ऐसी डिश है जो त्योहारों, पार्टियों और खास मौकों पर जरूर बनाई जाती है। लेकिन कई बार सारी मेहनत के बाद भी बड़े दही में भिगोने के बाद सख्त रह जाते हैं। ऐसे में स्वाद भी खराब हो जाता है और मन भी। अगर आपके दही बड़े भी कड़े रह गए हैं, तो घबराइए नहीं। कुछ आसान किचन टिप्स से आप बने हुए दही बड़ों को भी सॉफ्ट बना सकते हैं और अगली बार परफेक्ट स्पंजी दही बड़े तैयार कर सकते हैं।

विधि

उड़द दाल पीसने के बाद कम से कम 8-10 मिनट तक फेंटें। जब बैटर हल्का और फूला हुआ लगे, तभी तलें। थोड़ा बैटर पानी में डालें। अगर ऊपर तैरता है, तो समझिए हवा भर चुकी है। तेल मध्यम गरम होना चाहिए। बहुत गरम तेल बड़े को बाहर से सख्त और अंदर से कच्चा बना सकता है। गरम-गरम बड़े तुरंत गुनगुने पानी में 15 मिनट के लिए डालें। दही बड़े पर भुना जीरा पाउडर, लाल मिर्च, इमली की चटनी और हरी चटनी डालें। इससे स्वाद और भी बढ़ जाएगा।

सख्त क्यों हो जाते हैं?

उड़द दाल ठीक से फेंटी न गई हो, बैटर में हवा न भरी गई हो, तेल बहुत ठंडा या बहुत गरम हो, बड़े तलने के बाद सही तरीके से पानी में न भिगोए गए हों, दही बहुत गाढ़ा हो।

अगर दही बड़े सख्त रह जाएं तो करें ये काम

गुनगुने पानी में दोबारा भिगोएं, अगर बड़े पहले से दही में डाल दिए हैं और सख्त लग रहे हैं, तो उन्हें दही से निकाल लें। हल्के गुनगुने नमकीन पानी में 10-15 मिनट भिगो दें। हल्के हाथ से दबाकर अतिरिक्त पानी निकालें। फिर फेंटे हुए दही में डालें। इससे बड़े अंदर तक नरम हो जाएंगे। दही को अच्छी तरह फेंटें, गाढ़ा दही बड़े को सॉफ्ट नहीं होने देता। दही में थोड़ा दूध या पानी मिलाकर अच्छी तरह फेंट लें, थोड़ा चीनी और नमक डालकर बैलेंस स्वाद बनाएं, फिर बड़े डालें, स्मूद दही बड़े को जल्दी नरम करता है। हल्की भाप दें, अगर बड़े बहुत ज्यादा सख्त हैं, उन्हें 2-3 मिनट स्टीमर में हल्की भाप दें। फिर गुनगुने पानी में डालें। बाद में दही में मिलाएं। यह तरीका पुराने या फ्रिज में रखे बड़ों को भी मुलायम बना देता है।

हंसना मना है

अमीर आदमी- आज मेरे पास 14 कार,18 बाइक्स, 4 बंगले, 3 फार्महाउस हैं, तुम्हारे पास क्या है? गरीब आदमी- मेरे पास बेटा है, जिसकी गर्लफ्रेंड तेरी बेटी है।

पत्नी- शरम नहीं आती, दुसरी औरत को घुर-घुर कर देख रहे हो! अब तुम शादी शुदा हो। पति- ऐसा कहां लिखा है की उपवास हो तो खाने का मेनू भी नहीं देख सकते।

मुकेश अंबानी- अगर मैं सुबह से अपनी कार में निकलूं तो शाम तक अपनी आधी प्रॉपर्टी भी नहीं देख सकता, संता- हमारे पास भी ऐसी ही खटारा कार थी, बेच दी।

सरदार अपनी बीवी के साथ टैक्सी में बैठा, ड्राइवर ने आईना सेट किया, ये देखते ही सरदार- (गुस्से में) तू मेरी बीवी को देखता है, तु पीछे बैठ टैक्सी मैं चलाऊंगा!

बाप- बेटा अगर ससुराल वाले स्कूटर दे तो कार मांगना, कूलर दे तो एसी मांगना, लड़का- वो लड़की देंगे तो उसकी मां को भी मांग लूंगा।

कहानी | पिता और पुत्र

एक बार पिता और पुत्र जलमार्ग से यात्रा कर रहे थे, और दोनों रास्ता भटक गये। फिर उनकी नौका भी उन्हें ऐसी जगह ले गई, जहां दो टापू आस-पास थे और फिर वहां पहुंच कर उनकी नौका टूट गई। पिता ने पुत्र से कहा, अब लगता है हम दोनों का अंतिम समय आ गया है। दूर-दूर तक कोई सहारा नहीं दिख रहा है। अचानक उन्हें एक उपाय सूझा, अपने पुत्र से कहा कि वैसे भी हमारा अंतिम समय नजदीक है तो क्यों न हम ईश्वर की प्रार्थना करें। उन्होंने दोनों टापू आपस में बांट लिए। एक पर पिता और एक पर पुत्र, और दोनों अलग-अलग ईश्वर की प्रार्थना करने लगे। पुत्र ने ईश्वर से कहा- हे भगवन, इस टापू पर पेड़-पौधे उग जाएं जिसके फल-फूल से हम अपनी भूख मिटा सकें। प्रार्थना सुनी गयी, तत्काल पेड़-पौधे उग गये और उसमें फल-फूल भी आ गये। उसने कहा ये तो चमत्कार हो गया। फिर उसने प्रार्थना की, एक सुंदर स्त्री आ जाए जिससे हम यहां उसके साथ रहकर अपना परिवार बसाएं। तत्काल एक सुंदर स्त्री प्रकट हो गयी। अब उसने सोचा कि मेरी हर प्रार्थना सुनी जा रही है, तो क्यों न हम ईश्वर से यहां से बाहर निकलने का रास्ता मांगे? उसने ऐसा ही किया। उसने प्रार्थना की, एक नई नाव आजाए जिसमें सवार होकर हम यहां से बाहर निकल सकें। तत्काल नाव प्रकट हुई, और पुत्र उसमें सवार होकर बाहर निकलने लगा। तभी एक आकाशवाणी हुई, बेटा तुम अकेले जा रहे हो? अपने पिता को साथ नहीं लोगे? तो पुत्र ने कहा, उनको छोड़ो, प्रार्थना तो उन्होंने भी की, लेकिन आपने उनकी एक भी नहीं सुनी। शायद उनका मन पवित्र नहीं है, तो उन्हें इसका फल भोगने दो ना? आकाशवाणी कहती है- बेटा, क्या तुम्हें पता है, कि तुम्हारे पिता ने क्या प्रार्थना की? पुत्र बोला- नहीं। तो सुनो- तुम्हारे पिता ने एक ही प्रार्थना की, हे भगवन! मेरा बेटा आपसे जो मांगे, उसे दे देना।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

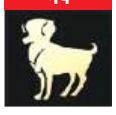

नौकरी में अधिकारी का सहयोग तथा विश्वास मिलेगा। पारिवारिक व्यस्तता रहेगी। आकस्मिक व्यय से तनाव रहेगा। अपेक्षाकृत कार्यों में विलंब होगा। विवेक से कार्य करें।

वृषभ

लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। शत्रु भय रहेगा। व्यापार-व्यवसाय में ग्राहकी अच्छी रहेगी। नौकरी में कार्य व्यवहार, ईमानदारी की प्रशंसा होगी। मशक्कत करने से लाभ होगा।

मिथुन

मान-सम्मान मिलेगा। कारोबारी नए अनुबंध होंगे। नई योजना बनेगी। वाणी पर नियंत्रण रखें। स्त्री कष्ट संभव। कलह से बचें। कार्य में सफलता, शत्रु पराजित होंगे।

कर्क

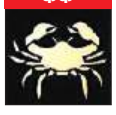

आज देव दर्शन के योग बनेंगे। राज्य से लाभ होने की संभावना। मातृ पक्ष की चिंता दूर होगी। वाहन-मशीनरी का प्रयोग सावधानी से करें। धनागम की संभावना। मित्र मिलेंगे।

सिंह

आज आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। प्रेम-प्रसंग में जोखिम न लें। वाहन व मशीनरी के प्रयोग में सावधानी रखें। झंझटों में न पड़ें। आगे बढ़ने के मार्ग मिलने की संभावना।

कन्या

जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। राजकीय बाधा दूर होगी। नेत्र पीड़ा की संभावना। धनलाभ एवं बुद्धि लाभ होगा। शत्रु से परेशान होंगे। अपमान होने की संभावना।

तुला

उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। धनागम सुस्त रहेगा। कार्य के प्रति अनमनापन रहेगा। दु:खद समाचार प्राप्त हो सकता है। कुछ लाभ की संभावना। चिंताएं कुछ कम होंगी।

वृश्चिक

पार्टी व पिकनिक का आनंद मिलेगा। विद्यार्थी वर्ग सफलता हासिल करेगा। शत्रु पर विजय, हर्ष के समाचार मिलने की संभावना। कुसंग से हानि। धनागम सुखद रहेगा।

धनु

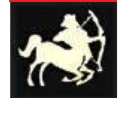

व्यर्थ भागदौड़ होगी। भय-पीड़ा, मानसिक कष्ट की संभावना। लाभ तथा पराक्रम ठीक रहेगा। दुखद समाचार प्राप्त होंगे। भय, पीड़ा व भ्रम की स्थिति बन सकती है।

मकर

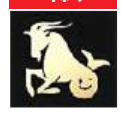

यात्रा के योग बनेंगे। कुछ कष्ट होने की संभावना। लाभ के योग बनेंगे। स्त्री वर्ग को कष्ट। कुसंग से कष्ट। कलहकारक दिन रहेगा। अपनी तरफ से बात को बढ़ावा न दें।

कुम्भ

आय में वृद्धि होगी। शुभ समाचार प्राप्त होंगे। पुराने मित्र व संबंधी मिलेंगे। स्वास्थ्य कमजोर रहेगा। चिंताएं जन्म लेंगी। स्त्री पीड़ा, कुछ लाभ की आशा करें।

मीन

आज अचानक अच्छा धन लाभ होगा। रोजगार में वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। परिवार की चिंता रहेगी। अस्वस्थता का अनुभव करेंगे।

23 को प्राइम वीडियो पर रिलीज होगा ग्राम चिकित्सालय का दूसरा सीजन

लोकप्रिय वेब सीरीज ग्राम चिकित्सालय का दूसरा सीजन जल्द ही आने वाला है। मेकर्स ने आज सोशल मीडिया पर इसका नया पोस्टर शेयर किया है। इसके साथ ही मेकर्स ने सीरीज की रिलीज डेट की घोषणा भी कर दी है। पहले सीजन ग्राम चिकित्सालय की कामयाबी के बाद, नया सीजन ग्राम चिकित्सालय 2 भी दर्शकों को गांव की जिंदगी और वहां के सरकारी अस्पताल की कहानी दिखाएगा। ग्राम चिकित्सालय 2 सीरीज 23 जून से प्राइम वीडियो पर देखी जा सकेगी। ग्राम चिकित्सालय 2 की कहानी भातकांडी गांव के डॉक्टर प्रभात (अमोल पाराशर) के आस-पास घूमेगी। डॉक्टर प्रभात गांव के अस्पताल को बेहतर बनाने की कोशिश कर रहे हैं। इस बार उनके सामने पहले से भी ज्यादा मुश्किलें

और नई चुनौतियां आएंगी। सीरीज के डायरेक्टर ललितम तिवारी के मुताबिक, ग्राम चिकित्सालय 2 सिर्फ एक कॉमेडी-ड्रामा नहीं है, बल्कि ग्रामीण भारत का असली चेहरा है। इस सीजन में गांव के लोगों के रिश्ते, उनके संघर्ष और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमियों को पूरी सच्चाई के साथ दिखाया गया है। ग्राम चिकित्सालय के सीजन 2 में अमोल पाराशर, विनय पाठक, आकांक्षा रंजन कपूर, आकाश मखीजा, आनंदेश्वर द्विवेदी, गरिमा विक्रांत सिंह और दिनेश लाल यादव ने अभिनय किया है। इसके निर्देशक ललितम तिवारी हैं। इस सीरीज की कहानी वैभव सुमन और श्रेया श्रीवास्तव ने लिखी है।

करिश्मा कपूर की वेब सीरीज ब्राउन की करण जौहर ने की तारीफ

बॉलीवुड | गपशप

फिल्ममेकर करण जौहर अभिनेत्री करिश्मा कपूर की नई वेब सीरीज ब्राउन को लेकर काफी उत्साहित हैं। बुधवार को सीरीज का ट्रेलर देखने के बाद करण ने करिश्मा की जमकर तारीफ की। इसके साथ ही उन्होंने ट्रेलर के बारे में भी खास बाते लिखी हैं। करण ने इंस्टाग्राम स्टोरी पर करिश्मा कपूर की वेब सीरीज ब्राउन का ट्रेलर शेयर किया है। इसकि साथ ही करण ने लिखा, करिश्मा ने एक पुलिसवाली के रूप में बेहतरीन काम किया है और वह उन्हें स्क्रीन पर देखने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। एएनआई के अनुसार, करिश्मा कपूर ने बताया कि वह शुरुआत में इस सीरीज को करने के लिए तैयार नहीं थीं। उन्हें लगा कि वह इतने दिनों के लिए

शूटिंग करने कोलकाता कैसे जाएंगी, इसलिए उन्होंने मना कर दिया था। लेकिन जब वह डायरेक्टर अभिनय देव से मिलीं और अपने किरदार की गहराइयों को समझा, तो उन्होंने हां कह दिया। करिश्मा ने सीरीज ब्राउन में अपने किरदार रीटा ब्राउन के बारे में कहा, यह किरदार अंदर से टूटा हुआ है, लेकिन बाहर से बहुत मजबूत है। मेरे लिए यह रोल काफी चुनौतीपूर्ण और रोमांचक था। उन्होंने यह भी कहा कि उन्होंने बहुत कम उम्र से काम करना शुरू कर दिया था, इसलिए अब वह अपनी मर्जी से काम चुनती हैं। जो रोल उनके दिल को छूता है, वह सिर्फ वही करती हैं। वेब सीरीज ब्राउन के निर्देशक अभिनय देव हैं। ब्राउन एक बहुचर्चित नियो-नॉर साइकोलॉजिकल थ्रिलर वेब सीरीज है, जो कोलकाता की पृष्ठभूमि पर आधारित है। यह सीरीज 5 जून को रिलीज होगी। यह सीधा ओटीटी प्लेटफॉर्म जी5 पर हिंदी में रिलीज हो रही है।

बॉलीवुड | मन की बात

नुसरत भरूचा ने तोड़ी चुप्पी, बोलीं आप लोग अपने बेबुनियाद विचारों पर काबू रखें

नुसरत भरूचा उस समय अचानक सुर्खियों में आ गईं, जब विराट कोहली की आरसीबी के आईपीएल जीतते ही उन्होंने एक स्टोरी साझा की। उनकी ये इंस्टाग्राम स्टोरी देखते-देखते ही वायरल हो गई। स्टोरी में दिख जरूर आरसीबी की जीत रही थी, लेकिन पीछे आ रही आवाजों ने सुर्खियां बटोरीं और स्टोरी को वायरल कर दिया। इसके बाद इस पर नुसरत को लेकर तरह-तरह के रिएक्शन आने लगे। अब नुसरत भरूचा ने इस वायरल स्टोरी पर पहली बार प्रतिक्रिया दी है और पूरे मामले पर चुप्पी तोड़ी है। नुसरत ने फिर से वो ही वीडियो अपने इंस्टाग्राम स्टोरी पर साझा किया। इसके साथ उन्होंने लिखा, 'फिर से पोस्ट कर रही हूं, क्योंकि मैं जानना चाहती हूं कि मेरे पप्पी (छोटे कुत्ते) की आवाजों से क्या दिक्कत है और क्यों इतना बवाल मचा है। कुछ लोगों ने हद ही कर दी है। एक पप्पी के रोने की आवाज से इतना बवाल मचा दिया। फिर किसी ने मेरी ओर से फर्जी स्पष्टीकरण भी साझा कर दिया। सच ये है कि मैं अपनी एक दोस्त के यहां मैच देख रही थी और वहां एक पप्पी पीछे रो रहा था, जिसकी आवाजें आ रही थीं। यह वीडियो मेरी दोस्त ने उसी समय बनाया।' बीते दिन इस घटना के बाद नुसरत सार्वजनिक रूप से नजर आईं, लेकिन इस दौरान भी वो पैपराजी से बचती दिखीं। अब उन्होंने इंस्टाग्राम स्टोरीज पर कई स्पष्टीकरण दिए हैं, जिनमें उस कमरे का एक वीडियो भी शामिल है, जहां कथित तौर पर वह उस दिन मैच देख रही थीं। उन्होंने लिखा, 'यह वही घर है जहां मैं मैच देख रही थी। यह मेरा पप्पी (छोटा कुत्ता) है। यह उसी रात का कुछ देर बाद का वीडियो है। मुझे डर था कि शायद कुछ हो गया होगा, इसलिए मुझे वह वीडियो डिलीट करने की सलाह दी गई और मैंने कर दिया। आप लोग अपने बेबुनियाद विचारों पर काबू रखें। मोबाइल फोन होने से उत्पीड़न का अधिकार नहीं मिल जाता। गलत मतलब न निकालें और आंख बंद करके किसी भी बात को सच न मान लें। सोच-समझकर और जिम्मेदारी से काम लें।

पुराने खंडहरों और तहखानों में क्यों मिलते हैं सांप, क्या सच में करते हैं रखवाली ?

फिल्मों और पुराने किस्सों में आपने अक्सर सुना होगा कि जहां कहीं कोई छिपा हुआ खजाना होता है, वहां उसकी रखवाली कोई सांप जरूर करता है। सदियों से लोगों के बीच यह धारणा चली आ रही है कि जमीन में दबे खजानों के आसपास सांपों का बसेरा होता है और वे उन खजानों की रक्षा करते हैं। लेकिन क्या वास्तव में ऐसा होता है, या इसके पीछे कोई वैज्ञानिक वजह छिपी है? दरअसल, विशेषज्ञों के अनुसार खजानों और सांपों के बीच का संबंध किसी रहस्यमयी शक्ति से नहीं, बल्कि प्राकृतिक परिस्थितियों से जुड़ा हुआ है। पुराने समय में राजा-महाराजा और धनी लोग अपनी संपत्ति को सुरक्षित रखने के लिए उसे जमीन के नीचे बने गुप्त कमरों, सुरंगों, तहखानों या खंडहरों में छिपाकर रखते थे। कई बार ये स्थान दशकों या यहां तक कि सदियों तक बंद पड़े रहते थे। समय के साथ ये जगहें इंसानी गतिविधियों से दूर हो जाती थीं। वहां न तो आवाजाही होती थी और न ही कोई व्यवधान। ऐसे स्थानों में आमतौर पर ठंडा, अंधेरा और शांत वातावरण बना रहता था, जो सांपों और अन्य छोटे जीवों के लिए आदर्श आश्रय साबित होता है। सांप ठंडे खून वाले जीव होते हैं। इसका मतलब है कि वे अपने शरीर का तापमान स्वयं नियंत्रित नहीं कर सकते है। इसलिए उन्हें मौसम और वातावरण के अनुसार सुरक्षित स्थानों की जरूरत पड़ती है। गर्मी के मौसम में तेज धूप से बचने और सर्दियों में तापमान संतुलित रखने के लिए सांप अक्सर जमीन के नीचे बने बिलों, सुरंगों और बंद कमरों में शरण लेते हैं। यही वजह है कि पुराने खंडहरों, तहखानों और गुप्त स्थानों में सांपों का मिलना आम बात है। इसी प्राकृतिक व्यवहार ने समय के साथ कई कहानियों और मिथकों को जन्म दिया। जब लोग किसी पुराने खजाने या खंडहर के पास सांप देखते थे, तो वे मान लेते थे कि सांप खजाने की रखवाली कर रहा है। धीरे-धीरे यह धारणा लोककथाओं और जनमान्यताओं का हिस्सा बन गई। हालांकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो सांपों का खजाने से कोई सीधा संबंध नहीं होता। वे सिर्फ ऐसे स्थानों को अपना सुरक्षित ठिकाना मानते हैं। इसलिए यदि किसी पुराने तहखाने, सुरंग या खंडहर में सांप दिखाई दे जाए, तो इसका मतलब यह नहीं कि वहां कोई खजाना छिपा है। फिर भी खजाने और सांपों से जुड़ी ये कहानियां आज भी लोगों की कल्पनाओं को रोमांचित करती हैं और रहस्य तथा रोमांच की दुनिया में अपनी खास जगह बनाए हुए हैं।

अजब-गजब | इस एक चीज में पाकिस्तान से पीछे है भारत

टॉप 20 देशों की सबसे खूबसूरत महिलाओं वाली लिस्ट में भारत से आगे निकला पाकिस्तान

दुनिया भर में सौंदर्य को लेकर अलग-अलग राय हो सकती है, लेकिन जब कोई ग्लोबल लिस्ट सामने आती है तो बहस छिड़ जाती है। हाल ही में इस्तांबुल आधारित कंपनी 'लग्जरी' ने ऑनलाइन वोटिंग के आधार पर दुनिया के टॉप 20 देशों की सबसे खूबसूरत महिलाएं वाली लिस्ट जारी की है।

इस लिस्ट ने भारत और पाकिस्तान दोनों देशों में खूब चर्चा बटोरी है, क्योंकि इसमें पाकिस्तान की महिलाओं को भारत से बेहतर रैंकिंग मिली है। तुर्की की महिलाओं को नंबर 1 स्थान मिला है। कंपनी के अनुसार तुर्की की महिलाओं में मेडिटरेनियन आकर्षण, कॉन्फिडेंस, लग्जरी और अनोखा स्टाइल है जो उन्हें दुनिया भर में सबसे खूबसूरत बनाता है।

लिस्ट में वेनेजुएला दूसरे, ब्राजील तीसरे और पाकिस्तान चौथे स्थान पर है। भारत छठे स्थान पर रहा है। इसके बाद स्वीडन, लेबनान, फिलीपींस और डेनमार्क जैसे देश शामिल हैं। यह लिस्ट जारी होते ही सोशल मीडिया पर आग की तरह फैल गई। पाकिस्तानी यूजर्स इसे अपनी जीत बता रहे हैं और जमकर जश्न मना रहे हैं। वहीं भारतीय यूजर्स निराशा जता रहे हैं।

कई लोग लिख रहे हैं, हमारे यहां की विविधता और सौंदर्य को कोई नहीं हरा सकता, लेकिन लिस्ट तो देख लो। कुछ यूजर्स ने इसे पूरी तरह बेकार और सब्जेक्टिव बताया है। कंपनी ने साफ किया है कि यह रैंकिंग पूरी तरह ऑनलाइन वोटिंग पर आधारित है। इसमें किसी वैज्ञानिक या ऑफिशियल पैमाने का इस्तेमाल नहीं किया गया है। लिस्ट का असर काफी गहरा पड़ा है। खासकर दोनों पड़ोसी देशों के बीच हमेशा चलने वाली तुलना में यह लिस्ट नया मुद्दा बन गई है। भारत में विविधता बहुत ज्यादा है। उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम तक अलग-अलग रंग, आकृति और आकर्षण की छटा है। बॉलीवुड, मिस वर्ल्ड और मिस यूनिवर्स जैसी प्रतियोगिताओं में भारतीय महिलाओं ने कई बार विश्व पटल पर अपना परचम लहराया है। फिर भी इस पोल में पाकिस्तान को ऊपर रखा जाना कई भारतीयों को चुभ रहा है।

पाकिस्तान की महिलाओं को भी अपनी संस्कृति, पारंपरिक पोशाक और नेचुरल ब्यूटी के लिए सराहा जाता रहा है। लिस्ट में उन्हें चौथा स्थान मिलना उनके लिए गर्व की बात बन गया है। पाकिस्तानी सोशल मीडिया पर ट्रेंडिंग टॉपिक्स में Pakistan beats India जैसे हैशटैग चल रहे हैं। सौंदर्य का कोई निश्चित मापदंड नहीं होता। यह संस्कृति, पर्यावरण, जेनेटिक्स और व्यक्तिगत आकर्षण पर निर्भर करता है। कुछ एक्सपर्ट्स कहते हैं कि ऐसे पोल अक्सर वोटिंग की संख्या और सोशल मीडिया कैंपेनिंग पर निर्भर करते हैं। हो सकता है पाकिस्तानी यूजर्स ने ज्यादा सक्रियता दिखाई हो।

राज्यों के संगठनों में बदलाव करने की तैयारी में कांग्रेस

कांग्रेस अध्यक्ष ने की संगठन महासचिव के साथ बैठक

» आधे दर्जन से अधिक राज्यों में अपने प्रदेश प्रभारियों और प्रदेश अध्यक्षों को बदलने की योजना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस में बड़े फेरबदल की सुगबुगाहट! राजस्थान, दिल्ली और पंजाब कांग्रेस संगठन में आने वाले समय में कुछ बड़ा होने वाला है। दरअसल आगामी चुनावी चुनौतियों को देखते हुए कांग्रेस आलाकमान देश भर में अपने संगठनात्मक ढांचे में एक बड़ा और व्यापक बदलाव करने की तैयारी में है। पार्टी आधे दर्जन से अधिक राज्यों में अपने प्रदेश प्रभारियों और प्रदेश अध्यक्षों को बदलने की योजना पर काम कर रही है। इस पूरी कवायद में सबसे ज्यादा चर्चा राजस्थान को लेकर है, जहां एक बार फिर दिग्गज युवा नेता सचिन पायलट की भूमिका को लेकर सियासी बाजार गर्म है।

इस पुनर्गठन प्रक्रिया ने पिछले हफ्ते तब गति पकड़ी, जब राहुल गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल के बीच एक उच्च स्तरीय बैठक हुई। पार्टी के अंदरूनी सूत्रों का मानना है कि कांग्रेस अध्यक्ष के तौर पर खरगे के कार्यकाल का यह आखिरी सबसे बड़ा सांगठनिक फेरबदल हो सकता है।

राजस्थान में भी नेतृत्व में बदलाव की संभावना

राजस्थान में भी नेतृत्व में बदलाव की संभावना है, जहाँ मौजूदा प्रदेश अध्यक्ष का कार्यकाल खत्म हो चुका है। सूत्रों का कहना है कि राजस्थान कांग्रेस के अगले अध्यक्ष बनने की दौड़ में सचिन पायलट सबसे आगे हैं। दिल्ली में भी मौजूदा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष का कार्यकाल जल्द ही खत्म होने वाला है। पार्टी सूत्रों के मुताबिक, वरिष्ठ नेता अभिषेक दत्त इस पद के लिए सबसे आगे चल रहे हैं। दिल्ली और राजस्थान के अलावा, पार्टी की व्यापक पुनर्गठन प्रक्रिया के तहत छत्तीसगढ़, केरल, तमिलनाडु और पंजाब में भी संगठनात्मक बदलाव की उम्मीद है।

आगामी राज्यों के चुनावों पर नजर

पार्टी का मुख्य ध्यान उन राज्यों पर है जहां अगले साल विधानसभा चुनाव होने हैं। उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, गोवा और मणिपुर में चुनाव होने हैं, इसलिए संगठनात्मक तैयारी एक अहम प्राथमिकता है। कांग्रेस गुजरात और हिमाचल प्रदेश में होने वाले चुनावी मुकाबलों पर भी नज़र बनाए हुए है, जहां अगले साल के अंत में विधानसभा चुनाव होने की उम्मीद है। पंजाब को छोड़कर, इन सभी राज्यों में पार्टी का सीधा मुकाबला भारतीय जनता पार्टी से होने की संभावना है।

अन्य राज्यों पर भी नजर

कांग्रेस हरियाणा, असम, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए भी नए राज्य प्रभारी नियुक्त कर सकती है। ये पद अलग-अलग कारणों से खाली हुए हैं और जल्द ही नियुक्तियों की घोषणा होने की संभावना है। केरल में भी नेतृत्व में बदलाव की उम्मीद है और पार्टी आने वाले हफ्तों में नए प्रदेश अध्यक्ष के नाम का ऐलान कर सकती है। इस संभावित फेरबदल को कांग्रेस नेतृत्व की उस कोशिश के तौर पर देखा जा रहा है, जिसका मकसद अगले साल यूपी, पंजाब, मणिपुर, गोवा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और गुजरात में होने वाले विधानसभा चुनावों से पहले पार्टी संगठन को मजबूत करना है। राजस्थान में 28 में चुनाव होंगे।

हिम्मत है तो बागी इस्तीफा देकर चुनाव लड़ें : महुआ

» टीएमसी सांसद पार्टी तोड़ने वालों पर बिफरीं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के भीतर बड़े पैमाने पर हुए राजनीतिक विद्रोह के मद्देनजर, सांसद महुआ मोइत्रा ने पार्टी के बागी विधायकों पर तीखा हमला करते हुए उन पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ गठबंधन करके मतदाताओं के साथ विश्वासघात करने का आरोप लगाया। उनकी यह टिप्पणी टीएमसी के 80 नवनिर्वाचित विधायकों में से 58 द्वारा बुधवार को विधानसभा अध्यक्ष रथिंद्रनाथ बोस के कक्ष तक मार्च करने के एक दिन बाद आई है। हाल ही में निष्कासित विधायकों ऋतब्रता बनर्जी और संदीपान साहा के नेतृत्व में, बागी गुट ने दलबदल विरोधी कानूनों को दरकिनार करने के लिए आवश्यक दो-तिहाई बहुमत का आंकड़ा पार करने का दावा किया है, और औपचारिक रूप से टीएमसी विधायक दल पर अपना दावा जताते हुए ऋतब्रता बनर्जी को आधिकारिक विपक्ष नेता (एलओपी) घोषित किया है।

मोइत्रा ने चुनाव आयोग को भी निशाना बनाते हुए उस पर भाजपा की कठपुतली होने का आरोप लगाया और केंद्रीय बलों के व्यवहार और चुनाव के दौरान मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से कथित तौर पर हटाने की आलोचना की। मोइत्रा ने इस बात पर ज़ोर दिया कि बागी विधायकों ने ममता बनर्जी के नेतृत्व और नाम पर ही अपनी सीटें जीतीं और उन्हें भाजपा विरोधी वोट मिले। उन्होंने बताया कि टीएमसी ने पार्टी के चुनाव चिह्न और ममता बनर्जी के नाम पर 41 प्रतिशत वोट हासिल किए।

जनता पर बोझ डालने की बजाय तेल के विकल्प खोजे सरकार : विक्रमादित्य

» हिमाचल प्रदेश के लोक निर्माण एवं शहरी विकास मंत्री बीजेपी पर भड़के

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

शिमला। हिमाचल प्रदेश के लोक निर्माण एवं शहरी विकास मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने गुरुवार को महंगाई और वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं पर चिंता व्यक्त करते हुए केंद्र सरकार से सुधारात्मक कदम उठाने का आग्रह किया। एएनआई से बात करते हुए सिंह ने कहा संकट जारी रहने की संभावना है और महंगाई लगातार बढ़ रही है। यह निश्चित रूप से हम सभी के लिए चिंता का विषय है। पेट्रोल, डीजल, कच्चा तेल, एलपीजी, प्राकृतिक गैस, कपड़ा और सीमेंट की कीमतें लगातार बढ़ रही हैं। सरकार को इन मुद्दों पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है।

अगर एक स्रोत से तेल उपलब्ध नहीं है, तो सरकार को आम नागरिकों पर बोझ डालने के बजाय, जरूरत पड़ने पर रूस से तेल खरीदने सहित वैकल्पिक स्रोतों पर विचार करना चाहिए। कमर्शियल एलपीजी की कीमतें लगातार बढ़ रही हैं और संभावना है कि भविष्य में घरेलू एलपीजी की कीमतें भी बढ़ेंगी। पेट्रोल और डीजल पहले से ही महंगे हैं। साथ ही, डॉलर के मुकाबले रुपये का मूल्य लगातार कमजोर हो रहा है। चूंकि तेल आयात का अधिकांश भुगतान डॉलर में होता है, इसलिए मजबूत डॉलर और कमजोर रुपये से अर्थव्यवस्था पर बोझ बढ़ जाता है। इसका असर आयात, निर्यात, किसानों, व्यापारियों और नागरिकों पर समान रूप से पड़ता है।

नारों से शासन नहीं चलता: शर्मिला रेड्डी

» कांग्रेस नेता का मोदी सरकार पर हमला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

हैदराबाद। आंध्र प्रदेश कांग्रेस कमेटी की अध्यक्ष वाईएस शर्मिला रेड्डी ने भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार के तहत भारत की आर्थिक नींव और लोकतांत्रिक संस्थानों के क्षरण के संबंध में राहुल गांधी की चिंताओं का समर्थन किया है। वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता और भारत पर इसके संभावित प्रभाव को लेकर शर्मिला ने आरोप लगाया कि नरेंद्र मोदी सरकार को एक मजबूत अर्थव्यवस्था, विश्वसनीय संस्थान और जनता का महत्वपूर्ण विश्वास विरासत में मिला था, लेकिन उसने पिछले एक दशक में इन्हें लगातार कमजोर किया है।

रेड्डी ने कहा कि राहुल गांधी ने देश को लगातार चेतावनी दी है कि प्रचार, भाई-भतीजावाद और कुछ मुट्ठी भर लोगों के हाथों में धन के संकेंद्रण पर आधारित अर्थव्यवस्था

बड़े वैश्विक झटकों का सामना नहीं कर सकती। आज, जब दुनिया बढ़ती आर्थिक उथल-पुथल का सामना कर रही है, तो उनकी ये चेतावनियां चिंताजनक रूप से प्रासंगिक साबित हो रही हैं। शर्मिला ने बढ़ती बेरोजगारी, परिवारों पर वित्तीय दबाव, घटती क्रय शक्ति, बढ़ती असमानता और लघु एवं मध्यम उद्यमों के सामने आने वाली चुनौतियों को भारतीय अर्थव्यवस्था की गहरी संरचनात्मक कमजोरियों के संकेतक के रूप में बताया। उन्होंने तर्क दिया कि भाजपा सरकार ने छवि निर्माण और सुर्खियां बटोरने पर ध्यान केंद्रित करते हुए, रोजगार सृजन, उत्पादक निवेश, संस्थागत मजबूती और सामाजिक सद्भाव जैसे सतत विकास के लिए आवश्यक प्रमुख कारकों की उपेक्षा की। उन्होंने टिप्पणी की कि भाजपा ने राजनीतिक विपणन की कला में महारत हासिल कर ली है, लेकिन केवल नारों और प्रचार के दम पर शासन कायम नहीं रह सकता।

लोकतांत्रिक और संवैधानिक संस्थाओं को किया जा रहा है कमजोर

शर्मिला ने लोकतांत्रिक और संवैधानिक संस्थाओं के व्यवस्थित रूप से कमजोर होने पर भी चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि जवाबदेही, पारदर्शिता और जनविश्वास के लिए जिम्मेदार निकायों से समझौता किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप नागरिकों में अविश्वास बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि भारत की संस्थाएं दशकों से अनगिनत नेताओं और लोक सेवकों के सामूहिक प्रयासों से बनी हैं। अल्पकालिक राजनीतिक लाभ के लिए इन्हें कमजोर करना देश के लिए भारी कीमत पर आता है। व्यवस्था के भीतर से ही आवाजें देश की दिशा को लेकर चिंता जता रही हैं।

भाजपा से इस्तीफे के बाद अन्नामलाई ने किया नई पार्टी बनाने का ऐलान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु बीजेपी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष के अन्नामलाई ने भारतीय जनता पार्टी से इस्तीफे देने के बाद एक नए राजनीतिक सफर की शुरुआत का ऐलान किया। उन्होंने कहा कि आज से एक नए राजनीतिक आंदोलन की शुरुआत कर रहे हैं और जनता से इस अभियान में साथ देने की अपील की।

अन्नामलाई ने बताया कि उन्होंने वर्ष 9 में डीएमडीके के साथ इंटर्नशिप की थी और साल 2020 में बीजेपी में शामिल हुए थे। फिर 24 अगस्त 2020 को बीजेपी में शामिल होने से पहले अभिनेता रजनीकांत ने उन्हें फोन कर अपनी संभावित राजनीतिक पार्टी में शामिल होने का प्रस्ताव दिया था, लेकिन बीजेपी के राष्ट्रीय संगठन महासचिव बीएल संतोष को पहले ही वचन दे चुके होने के चलते उन्होंने रजनीकांत के प्रस्ताव को अस्वीकार कर बीजेपी का दामन थाम लिया।

भारत का अफगानिस्तान से एक मात्र टेस्ट कल से

» भारतीय खिलाड़ियों ने नेट पर जमकर बहाया पसीना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुल्लांपुर। आईपीएल 2026 के बाद अब भारतीय खिलाड़ी राष्ट्रीय टीम की प्रतिबद्धता को पूरा करने में लगे हैं। भारत और अफगानिस्तान के बीच छह जून से मुल्लांपुर में टेस्ट मैच होना है। भारत ने इसकी तैयारी शुरू कर दी है। सुदर्शन और पडिक्कल दोनों ने नेट पर जमकर अभ्यास किया है लेकिन डस्काटे ने यह खुलासा नहीं किया कि इनमें से किस को मौका मिलेगा। डस्काटे ने गुरुवार को कहा, तीसरे नंबर पर कई बल्लेबाजों को आजमाया गया है जो आदर्श स्थिति नहीं है। हमें उस नंबर के दावेदारों पर विचार करना चाहिए और किसी एक को लंबे समय तक उस पर बनाए रखना चाहिए।

स्लिप में फील्डिंग पर गौर करने पर भी यह स्पष्ट नहीं हो पाया कि इनमें से किस खिलाड़ी को चुना जाएगा। पडिक्कल पहले केएल राहुल और कप्तान शुभमन गिल के साथ स्लिप में खड़े नज़र आए। राहुल के नेट पर जाने के बाद उनकी जगह सुदर्शन ने स्लिप में कैच का अभ्यास किया। नेट पर अभ्यास के दौरान सुदर्शन का फिर से अपने बल्ले पर नियंत्रण नहीं रहा और वह उनके हाथ से छूटकर पीछे चला गया। आईपीएल में दो बार वह इस तरह से हिटविकेट हो गए थे। बता दें भारत के लिए एक बार फिर तीसरे स्थान पर किसे भेजना है, ये एक चुनौती है और टीम के सहायक कोच रेयान टेन डस्काटे ने भी स्वीकार किया है कि चेतेश्वर पुजारा के संन्यास लेने के बाद टीम ने तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी करने के लिए कई खिलाड़ियों को आजमाया है और अब समय आ गया है जबकि साई सुदर्शन या देवदत्त पडिक्कल को बल्लेबाजी के इस महत्वपूर्ण स्थान पर लंबी अवधि तक मौका दिया जाए।

भारत को बड़ा झटका वनडे सीरीज से विराट कोहली बाहर

मुंबई। भारतीय क्रिकेट टीम को अफगानिस्तान के खिलाफ आगामी वनडे सीरीज से पहले बड़ा झटका लगा है। टीम के सबसे अनुभवी बल्लेबाजों में से एक विराट कोहली हैमस्ट्रिंग चोट के कारण पूरी सीरीज से बाहर हो गए हैं। भारत और अफगानिस्तान के बीच तीन मैचों की वनडे सीरीज 13 जून से धर्मशाला में शुरू होगी। बीसीसीआई के एक सूत्र ने जानकारी देते हुए कहा, वह हैमस्ट्रिंग चोट के कारण वनडे सीरीज से बाहर हो गए हैं। विराट कोहली के अलावा पूर्व कप्तान रोहित शर्मा की फिटनेस को लेकर भी स्थिति पूरी तरह स्पष्ट नहीं है। रोहित को आईपीएल के दौरान हैमस्ट्रिंग से जुड़ी समस्या का सामना करना पड़ा था और इसी वजह से उनकी उपलब्धता पर सवाल बने हुए हैं। उन्हें अफगानिस्तान सीरीज के लिए टीम में शामिल तो किया गया है, लेकिन उनकी भागीदारी फिटनेस पर निर्भर करेगी। टीम प्रबंधन उनकी स्थिति पर लगातार नजर बनाए हुए है। यही हालत हार्दिक पांड्या के साथ भी है।

मोदी सरकार होटल-कैसीनों के लिए कटवा रही है पेड़: राहुल

» ग्रेट निकोबार परियोजना पर कांग्रेस नेता ने उठाए सवाल

» नेता प्रतिपक्ष ने अपनी यात्रा पर आधारित वीडियो जारी किया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। पर्यावरण दिवस पर अंडमान निकोबार में ग्रेट निकोबार परियोजना को लेकर कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने शुक्रवार को एकबार फिर केंद्र सरकार पर हमला करारा बोला है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार का यह तर्क है कि ग्रेट निकोबार द्वीप परियोजना रक्षा और माल ढुलाई बंदरगाह से संबंधित है। यह एक झूठ है। इसके साथ ही आरोप लगाया कि यह असल में भारत की सबसे अमूल्य पारिस्थितिक भूमि पर एक व्यवसायी को होटल और कैसीनो बनाने में मदद करने के बारे में है।

राहुल गांधी ने अप्रैल के अंत में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की अपनी यात्रा पर आधारित 16 मिनट से अधिक का एक वीडियो जारी किया। एक्स पर वीडियो के साथ अपनी पोस्ट में गांधी ने कहा, 'मैंने भारत के सबसे दक्षिणी छोर का दौरा किया। मैं इंदिरा प्वाइंट पर खड़ा हुआ। मैं सदियों पुराने पेड़ों के नीचे चला। मैंने पृथ्वी पर सबसे जीवंत प्रवाल भित्तियों में गोता लगाया। मैं वहां रहने वाले लोगों के साथ बैठा। आदिवासी समुदाय, जिनकी जमीन वन अधिकार अधिनियम का उल्लंघन करके छीनी जा रही है। भारतीय सरकार द्वारा इन द्वीपों पर बसाए गए कई पूर्व सैनिक, जिन्हें उचित मुआवजा नहीं मिल रहा है।'सरकारी नक्शों से प्रवाल भित्तियों को मिटा दिया गया। सैनिकों और आदिवासियों को विस्थापित किया गया। क्योंकि एक व्यवसायी भारत की सबसे अमूल्य पारिस्थितिक भूमि पर होटल और कैसीनो बना सके। उन्होंने कहा,मैंने जिन भी युवा भारतीयों से बात की है। वह सभी इस बात को समझते हैं। आप जानते हैं कि किसी भी तरह का मुनाफा उस चीज को नष्ट करने के लायक नहीं है जिसे कभी वापस नहीं पाया जा सकता।

रक्षा से संबंधित आईएनएस बाज के विस्तार के साथ हैं हम

लोकसभा में विपक्ष के नेता ने कहा, मोदी सरकार और भाजपा आपको बताते हैं कि ग्रेट निकोबार परियोजना रक्षा से संबंधित है। ऐसा नहीं है। उन्होंने आगे कहा आईएनएस बाज का विस्तार कीजिए। हम सरकार का पूरा समर्थन करेंगे। नौसेना पिछले पांच वर्षों से विस्तार की मांग कर रही है, जिसे नजरअंदाज किया गया है। उन्होंने कहा कि सरकार लोगों को बता रही है कि यह परियोजना एक माल परिवहन बंदरगाह के बारे में है। जबकि ऐसा नहीं है। उन्होंने बताया कि भारत पहले से ही केरल में एक ऐसा संयंत्र बना रहा है, जो मुख्य भूमि पर स्थित है। उन्होंने आरोप लगाया, वास्तव में हुआ यह है 1.5 करोड़ पेड़ काटे गए।

पेड़ों को काट कर बाहर भेजा जाता है

गांधी ने कहा कि वह पारिस्थितिक रूप से संतुलित विकास के पक्षधर हैं। उन्होंने दावा किया कि ये द्वीप दुनिया के सबसे असाधारण टिकाऊ पर्यटन स्थल बन सकते हैं। उन्होंने आगे कहा कि यही वह भारत है जिसके लिए लड़ना सार्थक है। यह वह है जो मोदी नहीं चाहते कि आप देखें। योजना क्या है? राहुल गांधी ने वीडियो में कहते हैं। योजना यह है कि आप इन हजारों पेड़ों को काटते हैं। उन्हें अवैध रूप से बाहर भेजते हैं। अरबों-खरबों डॉलर कमाते हैं। उस पैसे का इस्तेमाल आप अपने होटल, कैसीनो और रियल एस्टेट बनाने में करते हैं। यही हो रहा है।

लोगों से जमीन छीन रहे हैं

उन्होंने बताया कि जिस क्षेत्र की बात हो रही है, वह नई दिल्ली के आकार से लगभग चार गुना बड़ा है। उन्होंने कहा कि सरकार इस परियोजना का निर्माण देश के सबसे स्वच्छ पारिस्थितिक वातावरण में कर रही है। गांधी का आरोप है, वह उन लोगों से जमीन छीन रहे हैं, जिन्हें वहां बसाया गया था। वह आदिवासियों से भी जमीन छीन रहे हैं।गांधी कहते हैं, आईएनएस बाज भी तट पर है। असल बात यह है कि वह गौतम अडानी की मदद करना चाहते हैं और यह अपराधी भारतीय जमीन हड़पने के लिए नौसेना और सेना की आड़ ले रहे हैं। वह कह रहे हैं कि वह एक ट्रांसशिपमेंट पोर्ट बनाना चाहते हैं, लेकिन यह संभव नहीं है क्योंकि वह पहले से ही केरल में एक बंदरगाह बना रहे हैं, जो मुख्य भूमि पर है, इसलिए यह पहला झूठ है।

8 जून को इंडिया गठबंधन की बैठक से दूर रहेगी डीएमके

» कनीमोझी ने अपनी पार्टी के लिए लोस में अलग बैठने की व्यवस्था की मांग की

» सांसद ने लोस अध्यक्ष को लिखा पत्र

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। एमके स्टालिन के नेतृत्व वाली डीएमके ने 8 जून को नई दिल्ली में होने वाली प्रस्तावित इंडिया गठबंधन की बैठक से दूर रहने का फैसला किया है। यह तमिलनाडु विधानसभा चुनावों के बाद हुए नाटकीय राजनीतिक बदलाव के मद्देनजर कांग्रेस के साथ डीएमके के संबंधों में आई दरार का संकेत है। यह विवाद तब शुरू हुआ जब कांग्रेस ने डीएमके की लंबे समय से सहयोगी रही कांग्रेस के बावजूद अभिनेता विजय की टीवीके को तमिलनाडु में सरकार बनाने में समर्थन देने का निर्णय लिया।

इस कदम से डीएमके नेताओं ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की और सार्वजनिक रूप से कांग्रेस पर विश्वासघात और पीठ में छुरा घोंपने का आरोप लगाते हुए कहा कि पार्टी ने राजनीतिक स्वार्थ के लिए दशकों पुरानी साझेदारी को तोड़ दिया है। यह दरार संसद में भी दिखने लगी है। संबंधों में आई दरार का एक महत्वपूर्ण संकेत देते हुए, डीएमके सांसद कनिमोझी ने हाल ही में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को पत्र लिखकर डीएमके सांसदों के लिए अलग बैठने की व्यवस्था की मांग की, जिसमें उन्होंने कांग्रेस से अलग होने के बाद बदली हुई राजनीतिक परिस्थितियों का हवाला दिया। इस कदम को व्यापक रूप से इंडिया ब्लॉक के भीतर दरार की पहली औपचारिक अभिव्यक्ति के रूप में देखा गया। विपक्षी इंडिया ब्लॉक के वरिष्ठ नेता 8 जून को राष्ट्रीय राजधानी में भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार के खिलाफ अपनी संयुक्त रणनीति पर चर्चा करने और महत्वपूर्ण राजनीतिक मुकाबलों से पहले विपक्षी समन्वय को मजबूत करने के लिए बैठक करेंगे। संविधान क्लब में होने वाली इस बैठक में लगभग 15 विपक्षी दलों के प्रतिनिधियों के शामिल होने की उम्मीद है। यह बैठक हाल ही में हुए विधानसभा चुनावों में इंडिया ब्लॉक के दो प्रमुख घटक दलों, पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस और तमिलनाडु में डीएमके की करारी हार के मद्देनजर हो रही है। इस बीच, पश्चिम बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और तृणमूल के महासचिव अभिषेक बनर्जी के इस महत्वपूर्ण विपक्षी बैठक में शामिल होने की संभावना है, जबकि पार्टी अभूतपूर्व आंतरिक उथल-पुथल से जूझ रही है और उसके अधिकांश विधायक नेतृत्व के खिलाफ बगावत कर रहे हैं। बनर्जी द्वारा टीएमसी नेताओं पर कथित हमलों का मुद्दा उठाने और इस मामले पर इंडिया ब्लॉक के घटक दलों से समर्थन मांगने की भी संभावना है।

कर्नाटक में शिवकुमार के सीएम बनते ही पार्टी में उठे बागी सुर

» रेड्डी के बाद अब मुनियप्पा ने दिया झटका

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बेंगलुरू। कर्नाटक में सीएम डीके शिवकुमार की सरकार के भीतर विभागों के बंटवारे को लेकर असंतोष की आवाजें तेज होती दिख रही हैं। वरिष्ठ नेता केएच मुनियप्पा ने अपने मौजूदा विभाग में बदलाव की मांग उठाई है। इससे पहले मंत्री रामलिंगा रेड्डी भी विभागों को लेकर नाराजगी जता चुके हैं।

खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री केएच मुनियप्पा ने कहा कि उन्होंने अपना विभाग बदलने की मांग पार्टी नेतृत्व के सामने रखी है। उन्होंने बताया कि जब राहुल गांधी हाल ही में कर्नाटक आए थे, तब भी उन्होंने इस संबंध में अनुरोध किया था।

मुनियप्पा ने कहा कि वह इस मुद्दे पर राहुल गांधी और सोनिया गांधी से भी बात करेंगे। उनका कहना है कि वरिष्ठ नेताओं को प्रोटोकॉल और अनुभव के अनुसार विभाग मिलने चाहिए। मुनियप्पा ने कहा कि यदि उन्हें समाज कल्याण, कृषि या सिंचाई विभाग दिया जाता है तो वह जनसेवा बेहतर तरीके से कर सकेंगे।

उन्होंने कहा कि खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग की जिम्मेदारी वह पिछले तीन वर्षों से निभा रहे हैं और अब बदलाव चाहते हैं।

सीएम शिवकुमार ने कहा समाधान निकाला जाएगा

कर्नाटक के मुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने शुक्रवार को कहा कि विभागों के बंटवारे को लेकर मंत्री रामलिंगा रेड्डी के इस्तीफे के मुद्दे का समाधान बातचीत के जरिए निकाल लिया जाएगा। उन्होंने वरिष्ठ कांग्रेस नेता को अपना करीबी मित्र और सम्मानित सहयोगी भी बताया। शिवकुमार ने कहा कि रेड्डी की आपत्ति उन्हें आवंटित विभाग की प्रकृति को लेकर है और उनकी चिंताओं का समाधान किया।

मैं कई संगठनों की सहायता करता रहता हूं: मनोज झा

कॉकरोच जनता पार्टी को सहयोग देने के आरोपों को राजद नेता ने नकारा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। ऑनलाइन व्यंग्य मंच से विरोध आंदोलन में परिवर्तित हुए कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के तेजी से उदय ने इसके वित्तपोषण और संस्थागत समर्थन को लेकर गहन राजनीतिक अटकलों और वायरल दावों को जन्म दिया है। आंदोलन की बढ़ती लोकप्रियता के बीच, हालिया सोशल मीडिया रिपोर्टों में आरोप लगाया गया है कि राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) के सांसद मनोज कुमार झा इस संगठन के प्रमुख संरक्षक हैं, विशेष रूप से नई दिल्ली के कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में समूह के लिए एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित करने में उनकी भूमिका का उल्लेख किया गया है।

ये आरोप तब और पुख्ता हो गए जब यह खुलासा हुआ कि हाल ही में हुई कॉकरोच जनता पार्टी की प्रेस कॉन्फ्रेंस के लिए स्थल की बुकिंग आरजेडी सांसद मनोज झा की सिफारिश पर की गई थी, जहां पार्टी ने तीन नए प्रवक्ता नियुक्त किए थे। इस संबंध के चलते राजनीतिक विश्लेषकों ने आरोप लगाया कि कॉकरोच जनता पार्टी विपक्ष के इंडिया ब्लॉक की कठपुतली मात्र है। इस बीत मनोज झा ने सफाई भी दी है। कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के बारे में राज्यसभा सांसद मनोज झा ने कहा कि आपने मेरा पत्र देखा है। यदि आप मेरे पत्र की सामग्री पढ़ेंगे, तो यह एक पत्रकार से संबंधित है जिनसे मैं सोशल मीडिया पर जुड़ा हुआ था, साथ ही दिल्ली विश्वविद्यालय के मेरे कुछ वरिष्ठ सहयोगियों से भी। मुझे बताया गया था कि उन्हें एक विशेष कार्यक्रम, एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित करने की आवश्यकता है। मैं आमतौर पर हर दो-तीन दिन में किसी न किसी नागरिक समाज संगठन के लिए इस तरह का काम करता हूं। मुझे बस इतना बताया गया था कि उन्हें एक कार्यक्रम आयोजित करने की आवश्यकता है, और पत्र में यह स्पष्ट रूप से लिखा है। उन्होंने आगे कहा कि मैं देखता हूं कि मीडिया में मेरे कई सहयोगी, तथ्यों की पुष्टि किए बिना और मेरे पत्र की वास्तविक सामग्री पर एक नज़र डाले बिना, अब आरोप लगा रहे हैं। यदि आप कॉन्स्टिट्यूशन क्लब के संबंध में मेरे पिछले रिकॉर्ड को देखेंगे, तो मैंने लगातार कई नागरिक समाज संगठनों की सहायता की है। जहां तक मेरा सवाल है, इस मामले को अब बंद मान लेना चाहिए... मैंने 12 या 13 में, उस पहले आंदोलन के समय भी यही भावना व्यक्त की थी। मैं आंदोलनों पर टिप्पणी नहीं करता हूं। इस तरह के लोग जिनकी विचारधारा में स्पष्टता की कमी है। उन्होंने कल भी मुझसे समर्थन नहीं मांगा। एक सकारात्मक बात यह है कि अगर भविष्य में कोई मुझसे जगह के लिए संपर्क करता है, तो मैं अब उचित जांच करूंगा।

कॉकरोच जनता पार्टी को कोर्ट से राहत

नई दिल्ली। दिल्ली हाई कोर्ट ने कॉकरोच जनता पार्टी के विरोध-प्रदर्शन के खिलाफ एहतियाती कार्रवाई की मांग वाली पीआईएल पर तत्काल सुनवाई से इनकार कर दिया है। सीजेपी की तरफ से कल (6 जून) को जंतर मंतर पर विरोध प्रदर्शन के आयोजन का आह्वान किया गया है। इस संबंध में रोकथाम, नियमन और भीड़-नियंत्रण के उपाय करने के निर्देश मांगने वाली याचिका दिल्ली हाई कोर्ट में दायर की गई थी जिस पर उसने तत्काल सुनवाई से इनकार कर दिया। सेव इंडिया फाउंडेशन की ओर से दायर याचिका पर जस्टिस सौरभ बनर्जी और जस्टिस अमित शर्मा की वेकेशन बेंच के सामने तत्काल सुनवाई के लिए जिक्र किया गया। हालांकि, कोर्ट ने मामले को तत्काल सुनवाई के लिए सूचीबद्ध करने से इनकार कर दिया।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। विधि सलाहकार: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा